AMBIKAPUR GG PAPER 20 MARCH 2025_Layout 2 3/20/2025 1:58 AM Page 1

संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

दैनिक घटती घटना

RNI REG. No.-CHHHIN/2004/15050
Po.Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 21, अंक - 136 गुरूवार 20 मार्च 2025 , पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

UPI से पेमेंट लेने पर अब होगी कमाई

मोदी सरकार के मंत्रीमंडल ने लिया बड़ा फैसला...मिलेगा कई फायदा

नई दिल्ली,19 मार्च 2025(ए)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बुधवार को यूपीआई पेमेंट पर बड़ा फैसला हुआ है। सरकार ने यूपीआई पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए इंसेंटिव (प्रोत्साहन) योजना शुरू की है, जिससे डिजिटल भुगतान को बढ़ावा मिलेगा और कम मूल्य वाले यूपीआई लेनदेन को प्रोत्साहित किया जाएगा। दरअसल,वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए कम मूल्य वाले BHIM-UPI लेनदेन जो किसी व्यक्ति से व्यापारी या मर्चेंट यानी 2रू को किए गए हैं उनको बढ़ावा देने के लिए 1,500 करोड़ रुपये के अनुमानित इंसेंटिव स्कीम को मंजूरी दी है। यह योजना 1 अप्रैल, 2024 से 31 मार्च, 2025 तक चलेगी। सरकार इस योजना पर लगभग 1,500 करोड़ रुपये खर्च करेगी। आइए जानते हैं इससे कैसे फायदा होगा?

किसको होगा फायदा?

योजना के तहत, 2,000 रुपए तक के यूपीआई लेनदेन के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया जाएगा, जिससे विशेष रूप से छोटे व्यापारियों को लाभ होगा। सरकार का लक्ष्य व्यापारियों और उपभोक्ताओं पर वित्तीय बोझ को कम करते हुए डिजिटल भुगतान की पहुंच बढ़ाना है। छोटे व्यापारियों के लिए 2,000 तक के यूपीआई (पी2एम) लेनदेन पर प्रति लेनदेन मूल्य 0.15 प्रतिशत का प्रोत्साहन। सभी श्रेणियों में लेनदेन के लिए शून्य मर्चेंट डिस्काउंट रेट (एमडीआर),लागत-मुक्त डिजिटल लेनदेन सुनिश्चित करना। एडमिटेड क्लेम अमाउंट का 80 प्रतिशत अधिग्रहण बैंकों द्वारा हर तिमाही में बिना किसी शर्त के वितरित किया जाएगा. बाकी जा बचा 20 प्रतिशत तभी जारी किया जाएगा जब बैंक तकनीकी गिरावट 0.75 प्रतिशत से नीचे और सिस्टम अपटाइम 99.5 प्रतिशत से ऊपर बनाए रखेंगे।

क्या है सरकार का मकसद?

सरकार के मुताबिक दुकानदारों के लिए आसान, सुरक्षित और तेज पेमेंट मोड आज के जमाने में यूपीआई है. इससे पेमेंट करने पर आपके साथ ही पैसे सीधे बैंक खाते में आएंगे. बिना किसी अतिरिक्त खर्च के PI सर्विस का लाभ मिलेगा. डिजिटल लेन-देन का रिकॉर्ड बनेगा, जिससे लोन मिलने में आसानी होगी. वहीं, ग्राहकों के लिए आसानी से पेमेंट करने की सुविधा, कोई एक्स्ट्रा चार्ज नहीं लगेगा

पिछले तीन वित्तीय वर्षों में, भारत सरकार ने डिजिटल लेनदेन प्रोत्साहन के लिए भुगतान में इतनी की है बढ़ोतरी

वित्त वर्ष 2021-22-1,389 करोड़
वित्त वर्ष 2022-23-2,210 करोड़
वित्तीय वर्ष 2023-24-3,631 करोड़

UPI से पेमेंट करता है, तो दुकानदार को 1.5 रुपये का इंसेंटिव मिलेगा. इसके साथ ही बैंकों को भी इंसेंटिव मिलेगा। सरकार, बैंकों के दावे की 80% राशि तुरंत दे देगी। सरकार का उद्देश्य डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देना और कैशलेस अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है।

मर्चेंट डिस्काउंट रेट कर दिया जीरो

सरकार का उद्देश्य वित्त वर्ष 2024-25 में 20,000 करोड़ का लेन-देन पूरा करना हैं। पेमेंट सिस्टम ठीक रखने वालों की मदद करना. छोटे शहरों और गावों तक PI को फैलाना। सिस्टम को चालू रखना और खराबी कम करना. सरकार डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए काम कर रही है। पहले, RuPay डेबिट कार्ड और BHIM-UPI लेन-देन पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट जीरो कर दिया गया था। अब, इस नई इंसेंटिव योजना से दुकानदारों को UPI पेमेंट लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

महत्वपूर्ण खबर

AICC ने 700 जिला अध्यक्षों को दिल्ली बुलाया

27-28 मार्च और 3 अप्रैल होगी अहम बैठक

नई दिल्ली,19 मार्च 2025(ए)। AICC : लगातार चुनावों में हार झेलने वाली कांग्रेस पार्टी अब अपने संगठन को मजबूत करने की तैयारी कर रही है। AICC देश भर के लगभग 700 जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्षों की एक तीन दिवसीय बैठक का आयोजन कर रही है। यह बैठक 27-28 मार्च और 3 अप्रैल को नई दिल्ली में तीन बैचों में होगी।

AICC के महासचिवों और प्रभारियों की एक बैठक में यह निर्णय लिया गया, जिसमें पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी भी शामिल थे। इस बैठक में प्रियंका गांधी वाड्रा सहित कुछ नेताओं के एक अनौपचारिक समूह द्वारा तैयार की गई संगठनात्मक मजबूती की रूपरेखा पर भी चर्चा हुई।

क्रिकेटर युजवेंद्र चहल और धनश्री वर्मा के तलाक पर बड़ा अपडेट आया

मुंबई,19 मार्च 2025(ए)। भारतीय टीम के स्टार स्पिनर युजवेंद्र चहल और उनकी पत्नी धनश्री वर्मा के तलाक को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही है। उन दोनों के तलाक पर फैसला कल (20 मार्च) आ सकता है। बॉम्बे हाई कोर्ट ने बांद्रा मजिस्ट्रेट कोर्ट को आदेश दिया है कि वो चहल और उनकी अलग रह रही पत्नी धनश्री द्वारा शुरू की गई आपसी तलाक की कार्यवाही पर गुरुवार तक फैसला करे.

34 साल के युजवेंद्र चहल IPL 2025 सीजन में उतरने की तैयारी में हैं. वो इस बार पंजाब किंग्स की ओर से खेलेंगे. टूर्नामेंट का आगाज 22 मार्च को होगा. जबकि पंजाब टीम अपना पहला मैच 25 मार्च को गुजरात टाइटन्स के खिलाफ खेलेगी.

युवक की जेब में मोबाइल हुआ ब्लास्ट

राजगढ,19 मार्च 2025(ए)। यदि आप भी मोबाइल यूजर हैं, तो थोड़ा ये खबर आपको परेशान कर सकती है. क्योंकि एमपी से एक ऐसी खबर आई है. राजगढ़ जिले के सारंगपुर में एक युवक की जेब में मोबाइल फट गया. इससे उसके गुप्तांग अंग में चोट आई. उसे गंभीर हालत में शाजापुर रेफर किया गया. जानकारी के मुताबिक, पानीपुरी का ठेला लगाकर गुजारा करने वाला 19 वर्षीय अरविंद सारंगपुर सब्जी मंडी में सब्जियां खरीदने गया था. जब वह अपनी बाइक से नैनवाड़ा गांव लौट रहा था. टोल टैक्स के पास अचानक उसकी पैंट की जेब में रखा मोबाइल फट गया, जिससे वह तेज रफ्तार बाइक से संतुलन खोकर हाईवे पर गिर गया. मोबाइल फटने से अरविंद के प्राइवेट पार्ट बुरी तरह से जख्मी हो गए. वहीं, सड़क पर गिरने से उसे उसके सिर में गंभीर चोटें आई हैं. राहगीरों ने तत्काल एंबुलेंस बुलाकर उसे सारंगपुर सिविल अस्पताल पहुंचाया. वहां प्राथमिक इलाज के बाद उसे शाजापुर के अस्पताल भेज दिया गया

किसानों और केंद्र सरकार की बैठक फिर बेनतीजा

» केंद्र ने नियुक्त किया अधिकारी,
अब चार मई को होगी चर्चा...

चंडीगढ़ 19 मार्च 2025(ए)। केंद्र सरकार और किसान संगठनों के बीच मंगलवार को हुई तीसरे दौर की बैठक भी बिना किसी नतीजे के समाप्त हो गई। न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) सहित किसानों की प्रमुख मांगों पर सहमति नहीं बन पाई। अब अगली बैठक 4 मई को निर्धारित की गई है। इस बीच, केंद्र ने एक सचिव स्तर के अधिकारी को नियुक्त किया है, जो देशभर के किसानों से एमएसपी पर सुझाव इकट्ठा करेगा।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बैठक के बाद कहा,किसानों के साथ सौहार्दपूर्ण माहौल में चर्चा हुई। हमने उनकी मांगों को सुना और अगली बैठक 4 मई को होगी। उन्होंने बताया कि किसानों द्वारा दी गई रिपोर्ट पर सभी हितधारकों की राय लेना जरूरी है, क्योंकि एमएसपी से जुड़ा कोई भी फैसला पूरे देश पर लागू होगा। बैठक चंडीगढ़ के सेक्टर-26 स्थित महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट में आयोजित की गई। पहले यह शाम 5 बजे शुरू होने वाली थी, लेकिन समय में बदलाव कर इसे पहले शुरू किया गया।

इसमें दो किसान संगठनों के 28 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। किसान नेता सरवन सिंह पंधेर ने कहा, हमने अपनी बात मजबूती से रखी और उम्मीद करते हैं कि केंद्र सरकार हमारे मुद्दों का हल निकालेगी। उधर, पंजाब के वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने पंजाब-हरियाणा सीमा पर सुरक्षा बल बढ़ाने की चर्चाओं को खारिज करते हुए कहा कि सरकार की ऐसी कोई योजना नहीं है। यह लगातार तीसरी बैठक है, जिसमें कोई ठोस प्रगति नहीं हुई। किसानों की मांगें, खासकर एमएसपी की कानूनी गारंटी, अब भी अनसुलझी हैं। सभी की निगाहें अब 4 मई की बैठक पर टिकी हैं, जहां इस गतिरोध को तोड़ने की उम्मीद जताई जा रही है।

बिना गोली चलाए अनुच्छेद 370 हटाकर जम्मू-कश्मीर का देश में किया पूर्ण विलय : राजनाथ सिंह

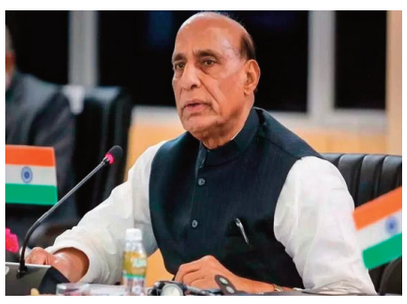

नई दिल्ली,19 मार्च। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बुधवार को कहा कि केंद्र की मोदी सरकार ने एक भी गोली चलाए बिना सबसे बड़ी बाधा अनुच्छेद 370 को हटाकर जम्मू-कश्मीर का देश में पूर्ण विलय किया। यह सभी हितधारकों को ध्यान में रखते हुए पूरी सुरक्षा के साथ शांतिपूर्ण तरीके से किया गया।

राजनाथ सिंह ने दिल्ली में आयोजित मेजर बॉब खाथिंग मेमोरियल कार्यक्रम के दौरान कहा कि सरकार प्रशासनिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित कर रही है। न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन और सुशासन के माध्यम से लोगों और सरकार के बीच के अंतर को कम किया गया है।

उन्होंने बताया कि मेजर बॉब खाथिंग ने एक भी गोली चलाए बिना तवांग को भारत में कुशलतापूर्वक शामिल किया था। उन्होंने न केवल तवांग, बल्कि पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र के एकीकरण,विकास और पुनर्निर्माण में मेजर खाथिंग की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि पूर्वोत्तर के लिए उन्होंने जो किया, वह सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर किए गए कार्य के समान है। रक्षा मंत्री ने कहा कि सरकार की विदेश नीति मेजर खाथिंग जैसे व्यक्तित्वों के कूटनीतिक कौशल पर आधारित है। आज भारत बहुध्रुवीय विश्व में व्याप्त अनिश्चितताओं के बीच अपनी हार्ड पावर और सॉफ्ट पावर के बीच संतुलन बनाए हुए है।

बिल्ड भारत एक्सपो 2025 का भव्य आगाज,केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने किया उद्घाटन

» एमएसएमई को बताया भारत की आर्थिक रीढ़
» जीतन राम मांझी लीज होल्ड औद्योगिक भूमि को फी-होल्ड करने के पक्षधर
» 20 देशों से 151 कंपनियां और व्यापार प्रतिनिधिमंडल हुए शामिल

नई दिल्ली,19 मार्च 2025(ए)। देश के प्रमुख औद्योगिक मेले बिल्ड भारत एक्सपो 2025 का आज भव्य शुभारंभ हुआ। भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित इस तीन दिवसीय आयोजन को भारतीय उद्योग संघ (आईआईए) द्वारा एमएसएमई क्षेत्र को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। एक्सपो का मकसद उद्योगों के लिए नए व्यापार अवसरों को बढ़ावा देना, नीतिगत चर्चाओं को प्रोत्साहित करना और वैश्विक साझेदारियों को मजबूत करना है।

केंद्रीय एमएसएमई मंत्री जीतन राम मांझी ने एक्सपो का उद्घाटन करते हुए छोटे और मझोले उद्योगों की अहमियत पर जोर दिया। इस अवसर पर 20 देशों के राजदूतों और व्यापार आयुक्तों, वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों, उद्योग जगत के दिग्गजों और उद्यमियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। एक्सपो में 151 से अधिक कंपनियों ने अपने उत्पादों और तकनीकों का प्रदर्शन किया, जबकि ऑस्ट्रिया, मलेशिया, रूस, ईरान, कनाडा और आइसलैंड सहित 34 देशों के व्यापार प्रतिनिधिमंडल इसमें भाग ले रहे हैं। केन्द्रीय मंत्री मांझी ने रोजगार, नवाचार और ग्रामीण विकास में एमएसएमई की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि यदि भारत को वैश्विक आर्थिक शक्ति बनना है, तो छोटे उद्योगों को मजबूती देना अनिवार्य है। उन्होंने जोर देकर कहा कि सिर्फ बड़े उद्योग भारत को आर्थिक महाशक्ति नहीं बना सकते, असली और स्थायी विकास तभी संभव होगा, जब एमएसएमई फलेंगे-फूलेंगे, रोजगार के नए अवसर पैदा करेंगे और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपने पैर जमाएंगे। उन्होंने सरकार की कई प्रमुख योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना का भी जिक्र किया,जो कारीगरों और छोटे व्यवसायों को वित्तीय सहायता और कौशल प्रशिक्षण प्रदान करती है। इसी के साथ उन्होंने उद्यम और उद्यम असिस्ट पोर्टल्स का लाभ उठाने की भी अपील की, जो व्यापार पंजीकरण और नीति समर्थन को आसान बनाते हैं।

हर पीने वाले को सप्ताह में दो बोतल शराब दे सरकार,विधानसभा में विधायक ने उठाई अजीब मांग

कर्नाटक 19 मार्च 2025(ए)। बिहार, गुजरात सहित भारत के कई राज्यों में शराबबंदी है। जिन राज्यों में शराब चालू है, वहां राज्य सरकार के राजस्व में मद्य विभाग से बड़ा पैसा आता है। गांधी दर्शन के अनुसार शराब पीना किसी भी सभ्य समाज के लिए उचित नहीं है.। लेकिन मौजूदा समय में शराब पीने का चलन ऐसा है कि 100 में 70 लोग पीने वाले ही मिलेंगे। चुनाव के मौके पर शराब बांटने का भी चलन भारत के कई इलाकों में है। इस बीच शराब को लेकर एक अजीब मांग सामने आई है. मांग उठाई है एक चुने हुए जनप्रतिनिधि ने, वो भी विधानसभा में. मांग है कि सरकार हर सप्ताह पीने वाले को दो बोतल शराब दे।

कर्नाटक विधानसभा में जेडीएस विधायक ने उठाई मांग

दरअसल यह अजीब मांग उठाई गई है कि दक्षिण भारतीय राज्य कर्नाटक में. बुधवार को कर्नाटक विधानसभा में JDS के वरिष्ठ विधायक MT कृष्णप्पा ने सरकार से हर सप्ताह लोगों को दो बोतल शराब देने की मांग की। JDS विधायक MT कृष्णप्पा चाहते है कि सिद्धरमैया सरकार अपनी 5 गारंटी में शराब की दो बोतल भी पुरुषों को दे।

पुरुषों को हर सप्ताह दो बोतल शराब दे: जेडीएस विधायक

उन्होंने आगे कहा कि हर महीने पैसे देना संभव नहीं है, है न? बस दो बोतल. यह हमारा पैसा है जो शक्ति योजना, मुफ्त बस और करंट के लिए दिया जा रहा है, है न? तो पुरुषों को हर सप्ताह दो बोतल देने में क्या बुराई है? इसे करवाइए. कॉपरेटिव सोसाइटी के जरिए ऐसा करने दीजिए। जॉर्ज को यह करने दीजिए. समाज की ओर से यह दीजिए।

दर्दनाक हादसा टेंपो में लगी भीषण आग

ग्राफिक्स कंपनी के चार कर्मचारी जिंदा जले,कई झुलसे...

पुणे 19 मार्च 2025(ए)। पुणे के हिंजेवाड़ी इलाके में एक टेम्पो में भीषण आग लग गई। टेम्पो में सवार चार लोगों की जलने से दर्दनाक मौत हो गई। चारों लोग व्योमा ग्राफिक्स कंपनी के कर्मचारी थे। इस टेम्पो में कंपनी के कुल 12 कर्मचारी यात्रा कर रहे थे। पूरा टेम्पो जलकर राख हो गया है।

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, हिंजेवाड़ी फेज-1 में ड्राइवर के पैरों के नीचे अचानक आग लग गई। तभी ड्राइवर और आगे का स्टाफ तुरंत नीचे उतर गया। हालांकि, पीछे का दरवाजा नहीं खुलने के कारण चार लोगों की जलकर मौत हो गई। घटना से इलाके में हड़कंप मच गया। आस-पास के लोग मौके पर पहुंचे। उन्होंने आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। दुर्घटना की सूचना मिलने पर पुलिस की टीम भी मौके पर पहुंची। पुलिस ने घायलों को तुरंत इलाज के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया। वहीं, पुलिस ने चारों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस घटना की जांच कर रही है।

नागपुर हिंसा में भीड़ ने महिला पुलिसकर्मियों से की छेड़छाड़

» किए अश्लील इशारे और कमेंट,मामला दर्ज

नागपुर 19 मार्च 2025(ए)। सोमवार देर रात को महाराष्ट्र के नागपुर के चिटनिस पार्क से सीए रोड पर प्रदर्शनकारियों ने महिला पुलिसकर्मियों के साथ दुर्व्यवहार किया। एक महिला पुलिस कर्मचारी ड्यूटी पर थी। भीड़ ने महिला पुलिस कर्मचारी से छेड़छाड़ करने की कोशिश की। इस दौरान कुछ बदमाशों ने पीड़ित महिला पुलिस कर्मचारी की वर्दी खींचने की कोशिश की और उसके शरीर को भी छूने की कोशिश की। महिला पुलिस कर्मचारी ने यौन उत्पीड़न की इस हरकत की शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से की है और इसके बाद भीड़ के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। शिकायत में यह बात सामने आई है कि इसी भीड़ ने मौके पर मौजूद अन्य महिला पुलिस कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार किया और उन्हें देखकर अश्लील इशारे और अश्लील टिप्पणियां की गईं।

नागपुर में सोमवार को रात दंगाइयों द्वारा जलाए गए दो पहिया, चार पहिया वाहनों और निर्माण कार्य में लगने वाली मशीनों का पंचनामा करने का कार्य प्रशासन द्वारा शुरू कर दिया गया है। इसके अलावा दुकानों ,घरों में तोड़फोड़ से हुए नुकसान का जायजा लिया जा रहा है। नागपुर जिला अधिकारी द्वारा इसका पत्र भी विभागों को सौंप दिया गया है कि जल्द से जल्द पंचनामा तैयार करें, पंचनामा की रिपोर्ट तैयार करने के बाद इसे सरकार के पास भेजा जाएगा, कल महाराष्ट्र के मंत्री एवं नागपुर के प्रभारी मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा था कि सभी का पंचनामा करने का आदेश दे दिया गया है।

बता दें कि सोमवार को दिन में नागपुर के महाल में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा के सामने विश्व हिंदू परिषद ने औरंगजेब की कब्र हटाने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया गया था। शाम होते होते दो गुटों में विवाद शुरू हो गया। गांधी गेट पर शिवाजी की प्रतिमा के सामने विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने औरंगजेब की प्रतीकात्मक कब्र को जलाया। धार्मिक चादर के जलने को लेकर मुस्लिम समाज में रोष फैला था। दोपहर की नमाज के बाद स्थानीय युवाओं ने यह कृत्य करने वालों के खिलाफ गणेशपेठ थाने में शिकायत भी दर्ज करवाई।

AMBIKAPUR GG PAPER 20 MARCH 2025_Layout 2 3/20/2025 1:58 AM Page 2

संपादकीय

प्रतिसपर्धी बने सहायक

भारत के राष्ट्रीय चैंपियन इतनी सहजता से बहुराष्ट्रीय कंपनी के सहायक की भूमिका में आ सकते हैं, तो उनके राष्ट्रीय चरित्र एवं भूमिका पर सवाल खड़े होंगे। इससे भारत उदय की सारी कथा पर नए सिरे से सोचने की परिस्थिति पैदा होगी।भारत के दूरसंचार बाजार में लगभग ड्यूपॉली (द्वि-अधिकार) की स्थिति है। रिलायंस जियो और भारती एयरटेल का बाजार के ज्यादातर हिस्से पर कब्जा है। इन्हें प्रतिस्पर्धी कंपनियां समझा जाता है। सैटेलाइट इंटरनेट सेवा के क्षेत्र में इलॉन मस्क की कंपनी स्पेस-एक्स के उतरने की संभावना के बीच अपेक्षा थी कि दोनों कंपनियां आपसी प्रतिस्पर्धा जारी रखते हुए स्पेस-एक्स की स्टारलिंक सेवा के साथ होड़ करेंगी। मगर अब सूरत यह है कि भारत में उपग्रह इंटरनेट सेवा शुरू होने के पहले ही उसमें स्टारलिंक की मोनोपॉली (एकाधिकार) कायम हो गई है। जिन कंपनियों से प्रतिस्पर्धा की अपेक्षा थी, वे स्पेस-एक्स की सहायक बन गई हैं। दोनों कंपनियों ने स्पेस-एक्स से जो करार किया, उससे साफ है कि ये भारतीय बाजार में स्टारलिंक सेवा प्रदान करने वाली एजेंसी की भूमिका में होंगी। इसीलिए इन कंपनियों के बीच हुए करार को आश्चर्यजनक घटना माना गया है। जियो भारत में सबसे बड़ा टेलीकॉम ऑपरेटर है। अनुमान है कि उसके 48 करोड़ से अधिक यूजर हैं। अब वह अपने रिटेल स्टोरों में स्टारलिंक के उपकरण का स्टॉक करेगी। उसके हजारों आउटलेट्स का उपयोग स्टारलिंक अपने प्रत्यक्ष वितरण केंद्र के रूप में करेगी। इसी भूमिका में एयरटेल भी होगी। यहां याद करना उचित होगा कि सैटेलाइट इंटरनेट के स्पेक्ट्रम आवंटन को लेकर मस्क और भारतीय कंपनियों के बीच टकराव की स्थिति बनी हुई थी। रिलायंस चाहती थी कि सेटेलाइट ब्रॉडबैंड स्पेक्ट्रम की नीलामी हो। मस्क की कंपनी का तर्क था कि स्पेक्ट्रम का आवंटन प्रशासनिक रूप से किया जाए। लेकिन अब सारा विवाद दूर हो गया है। वह भी तब, जबकि भारत सरकार ने स्पेक्ट्रम का आवंटन किया नहीं है। वैसे मीडिया कयास के मुताबिक इन करार के पीछे भारत और अमेरिका की सरकारों ने भी परोक्ष भूमिका निभाई है। इस घटनाक्रम से भारतीय पूंजीवाद के रूप पर नई बहस खड़ी होगी। भारत के राष्ट्रीय चैंपियन' इतनी सहजता और स्वेच्छा से बहुराष्ट्रीय कंपनी के सहायक की भूमिका को स्वीकार कर सकते हैं, तो उनके राष्ट्रीय चरित्र एवं भूमिका से जुड़े सवाल खड़े होंगे। इससे भारत उदय की सारी कथा पर नए सिरे से सोचने की परिस्थिति पैदा होगी।

सुनहरा लम्हा...धरती पर लौटीं सुनीता विलियम्स

सुनीता विलियम्स की उपलब्धियाँ न केवल भारतीय वैज्ञानिकों बल्कि देश के युवाओं के लिए भी हैं प्रेरणा का स्रोत

सत्यवान सौरव
भीवानी,हरियाणा

सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर की धरती पर सुरक्षित वापसी एक बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धि मानी जा रही है। वे जून 2024 में बोइंग के स्टारलाइनर मिशन के तहत अंतरिक्ष गए थे, लेकिन तकनीकी खामियों के चलते उनकी वापसी में नौ महीने की देरी हुई। इस कारण वे अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर लंबे समय तक रुके रहे। यह मिशन न केवल तकनीकी दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण था, बल्कि अंतरिक्ष में लंबे समय तक रहने के प्रभावों को समझने में भी सहायक होगा। उनकी सुरक्षित वापसी से भविष्य में अंतरिक्ष अभियानों के लिए नई संभावनाएँ खुलेंगी। इससे नासा और बोइंग को स्टारलाइनर की खामियों को सुधारने का मौका मिलेगा। उनके अनुभव और उपलब्धियाँ न केवल अंतरिक्ष क्षेत्र बल्कि विज्ञान और तकनीक में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक प्रेरणा हैं। उनकी कहानी यह संदेश देती है कि सीमाएँ केवल मानसिकता में होती हैं और यदि कोई लक्ष्य निर्धारित किया जाए, तो उसे प्राप्त किया जा सकता है।

नासा की अनुभवी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और उनके साथी बुच विल्मोर, जो पिछले नौ महीने से अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर थे, आज सफलतापूर्वक धरती पर लौट आए हैं। स्पेसएक्स के ड्रैगन कैप्सूल की मदद से उन्होंने मेक्सिको की खाड़ी में सुरक्षित लैंडिंग की। सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर जून 2024 में बोइंग के स्टारलाइनर के साथ परीक्षण उड़ान के लिए अंतरिक्ष में गए थे। हालांकि, स्टारलाइनर में तकनीकी खामी के कारण उनकी वापसी में देरी हुई, जिससे वे नौ महीने तक ISS पर रहे। उनकी वापसी के लिए स्पेसएक्स का क्रू-10 मिशन लॉन्च किया गया था, जिसने सफलतापूर्वक उन्हें धरती पर वापस लाया। वापसी के बाद, दोनों अंतरिक्ष यात्रियों को स्ट्रेचर पर ले जाया गया, जो लंबे समय तक भारहीनता में रहने के बाद सामान्य प्रक्रिया है। यह मिशन न केवल तकनीकी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा, बल्कि इससे वैज्ञानिकों को अंतरिक्ष में लंबे समय तक रहने के प्रभावों को समझने में भी मदद मिलेगी। इससे नासा और अन्य अंतरिक्ष एजेंसियों को भविष्य के गहरे अंतरिक्ष अभियानों, जैसे कि मंगल पर मानव मिशन की योजना बनाने में सहायता मिलेगी। सुनीता विलियम्स की यह वापसी अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह मिशन भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए मूल्यवान डेटा प्रदान करेगा और अंतरिक्ष यान तकनीक के सुधार में सहायक सिद्ध होगा। सुनीता विलियम्स और उनके जैसे अनुभवी अंतरिक्ष यात्री भविष्य के चंद्र और मंगल अभियानों में अहम भूमिका निभा सकते हैं। नासा और अन्य स्पेस एजेंसियाँ अब दीर्घकालिक अंतरिक्ष मिशनों की तैयारी कर रही हैं,जिनमें अंतरिक्ष में रहने के नए तरीके, कृत्रिम गुरुत्वाकर्षण की संभावनाएँ और अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने की रणनीतियाँ शामिल हैं। इसके अलावा, स्टारलाइनर जैसी तकनीकों में सुधार कर, अंतरिक्ष अन्वेषण को अधिक सुरक्षित और कुशल बनाया जाएगा। अंतरिक्ष में मानव उपस्थिति को और विस्तारित करने के लिए वैज्ञानिक शोध जारी रहेंगे, जिससे भविष्य में मंगल और उससे आगे की यात्राएँ संभव हो सकेंगी। सुनीता विलियम्स भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री हैं, जिनका भारत से गहरा जुड़ाव रहा है। उनके पिता भारतीय मूल के हैं और उन्होंने कई बार भारत के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया है। भारत में अंतरिक्ष विज्ञान और अनुसंधान की बढ़ती उपलब्धियों के बीच, सुनीता विलियम्स एक प्रेरणास्रोत बनी हुई हैं। इसरो (ISRO) भी अब मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम, गगनयान, की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। इसरो ने हाल ही में गगनयान के लिए प्रमुख परीक्षण पूरे किए हैं और आने वाले वर्षों में भारत के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन को लॉन्च करने की योजना बना रहा है।

सुनीता विलियम्स की उपलब्धियाँ न केवल भारतीय वैज्ञानिकों बल्कि देश के युवाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत हैं। उनकी सफलता यह दिखाती है कि भारतीय मूल के लोग वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। भविष्य में, इसरो और नासा के बीच सहयोग बढ़ सकता है,जिससे भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को और मजबूती मिलेगी। सुनीता विलियम्स न केवल एक उत्कृष्ट अंतरिक्ष यात्री हैं,बल्कि एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व भी हैं। उनका सफ़र यह दर्शाता है कि कड़ी मेहनत,दृढ़ संकल्प और विज्ञान के प्रति जुनून कैसे किसी को नई ऊंचाइयों तक पहुँचा सकता है। उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं और युवा वैज्ञानिकों को प्रेरित किया है कि वे अंतरिक्ष अनुसंधान और विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ें। उन्होंने कई मौकों पर भारतीय छात्रों और युवाओं से संवाद किया है और उन्हें वैज्ञानिक क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। उनके अनुभव और उपलब्धियाँ न केवल अंतरिक्ष क्षेत्र बल्कि विज्ञान और तकनीक में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक प्रेरणा हैं। उनकी कहानी यह संदेश देती है कि सीमाएँ केवल मानसिकता में होती हैं और यदि कोई लक्ष्य निर्धारित किया जाए, तो उसे प्राप्त किया जा सकता है।

सुनीता विलियम्स और उनके जैसे अनुभवी अंतरिक्ष यात्री भविष्य के चंद्र और मंगल अभियानों में अहम भूमिका निभा सकते हैं। नासा और अन्य स्पेस एजेंसियाँ अब दीर्घकालिक अंतरिक्ष मिशनों की तैयारी कर रही हैं, जिनमें अंतरिक्ष में रहने के नए तरीके, कृत्रिम गुरुत्वाकर्षण की संभावनाएँ और अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने की रणनीतियाँ शामिल हैं। इसके अलावा,स्टारलाइनर जैसी तकनीकों में सुधार कर,अंतरिक्ष अन्वेषण को अधिक सुरक्षित और कुशल बनाया जाएगा। अंतरिक्ष में मानव उपस्थिति को और विस्तारित करने के लिए वैज्ञानिक शोध जारी रहेंगे, जिससे भविष्य में मंगल और उससे आगे की यात्राएँ संभव हो सकेंगी। सुनीता विलियम्स की यह वापसी अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह मिशन भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए मूल्यवान डेटा प्रदान करेगा और अंतरिक्ष यान तकनीक के सुधार में सहायक सिद्ध होगा। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुनीता विलियम्स की सफल वापसी पर बधाई दी और उनके साहस तथा समर्पण की सराहना की। उन्होंने कहा कि सुनीता विलियम्स न केवल भारतीय मूल के लोगों के लिए गर्व का विषय हैं, बल्कि पूरे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी कहा कि उनका यह मिशन भारत के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों और युवाओं के लिए एक प्रेरणा है, जो अंतरिक्ष में नई ऊंचाइयों को छूने का सपना देखते हैं।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

देश की आर्थिक समृद्धि,ज्ञान शिक्षा और विज्ञान

संजीव ठाकुर
रायपुर,छत्तीसगढ़

इतिहास का पन्ना पलटें तो हर सभ्यता ने अपने कई कई रूप बदले हैं संस्कृति ने नए नए नए आयाम का सृजन किया है वैसे भी जीवन परिवर्तन का पर्याय है एवं विकास का स्वरूप है यह सर्वकालीन सत्य है कि शिक्षा एवं ज्ञान का महत्व हर संस्कृति,सभ्यता और मानवीय समुदाय के जीवन में एक प्रकाश पुंज की तरह उन्हें विकास की दिशा दिखाते हुए आया है जिस देश की भाषा जितनी समृद्ध होगी उस देश की सभ्यता संस्कृति और ज्ञान उत्तम शिखर पर होगा और विकास की नई नई धाराएं बहेगी मानवीय विकास के साथ मनुष्य को अधिक परिपक्व को समझदार तथा समृद्ध बनाने में शिक्षा,भाषा,ज्ञान और साहित्य का सर्वाधिक महत्व रहा है। शिक्षा चाहे आपके परिवार से प्राप्त हुई हो,स्कूल कॉलेज अथवा किसी शिक्षण संस्थान से प्राप्त हुई हो या भारतीय संस्कृति के वैदिक शास्त्रों से प्राप्त हुई हो,शिक्षा का मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में बड़ी अहम भूमिका होती हैद्य शिक्षा भी समाज संस्कृति एवं सभ्यताओं के साथ परिवर्तनशील तथा प्रगतिशील है। शिक्षा, ज्ञान तथा संस्कृति और कला साहित्य को देश और विदेश की सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता है। यह असीमित भंडार है एवं इसमें आकाशीय ऊंचाइयां भी शामिल रहती हैंद्य शिक्षा और ज्ञान न तो गहराइयां न ही नापी नजा सकती है, और ना ही इसकी ऊंचाई को देखा जा सकता है। पूर्वी सभ्यता जहां अध्यात्म,वेद ,पुराणों पर अवलंबित है, वहीं पश्चिमी सभ्यता ज्ञान विज्ञान नए नए अविष्कार और आकाश की अनछुई कई बातों को उजागर करने वाली है। ऐसी शिक्षा तथा ज्ञान के कारण मानव चंद्रमा पर पहुंच कर एक नई गाथा लिख पाया हैद्य वस्तुतः पूर्व तथा पश्चिम ज्ञान विज्ञान तथा शिक्षा के मामले में एकाकार हो चुका है कोई भी भेदभाव या विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती हैद्य पूरी सभ्यता ने जहां पाश्चात्य दर्शन से नए नए अविष्कारों हवाई जहाज,इंजन,ग्रामोफोन,रेडियो एवं नई नई टेक्नोलॉजी को अपनाया है वहीं पश्चिमी दर्शन ने भारती ज्ञान विज्ञान संस्कार आयुर्वेद योग धर्म दर्शन को अपना कर अपनी जीवनशैली में शांति तथा सौभाग्य स्थापित किया है। यह सब शिक्षा भाषा एवं ज्ञान के बदौलत पूर्व और पश्चिम का मेल संभव हो पाया है। शिक्षा और भाषा सदैव ही अज्ञानता के तमस में एक प्रकाश पुंज की तरह देदीप्यमान होता रहा है,नवजीवन की विकास धारा में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया हैद्य हमारे कई धर्मों में जिनमें जैन,बौद्ध दर्शन, नव्य वेदांत तथा भारतीय संस्कृति के नवीन चिंतन के सामने आने से नवयुग की कल्पना को साकार किया है। पश्चिम के कई विद्वान और चिंतक जिनमें प्लूटो, अरस्तु, सुकरात, कार्ल मार्क्स, लेनिन ने अनेक विकास के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। जिसका पूरे विश्व ने खुले दिल से स्वागत किया एवं विकास की नई नई की इबारत लिखी है।

दूसरी ओर भारत की संस्कृति, सभ्यता और समाज में सदैव आवश्यक सुधार तथा नई नई बुद्धिमता पूर्ण युक्तियों को अपने में आत्मसात करने की एक अलग क्षमता रही है, और विकास का मूल मंत्र भी परिवर्तनशील जीवनशैली ही है द्य राजनीति तो सदैव परिवर्तन पर अवलंबित रहती है। स्वतंत्रता के पहले तथा बाद में राजनीतिक घटनाक्रम जिस नव परिवर्तन युग की तरफ अग्रसर हुए हैं वह अत्यंत उल्लेखनीय हैद्य भारतीय सभ्यता समाज और संस्कृति जितनी जटिल तथा गूढ है उसको जितना समझा जाए, उसका जितना अध्ययन किया जाए तो उससे नवीन बातें समझ में आती है, और उसके नए नए अर्थ हमारे सामने आते हैं, जिसका बहु आयामी उपयोग हम अपनी जीवनशैली में परिवर्तन करने के लिए सदैव कर सकते हैं। स्वतंत्रता के बाद तो भारत देश ने ज्ञान भाषा तथा संस्कृति में अनेक परिवर्तन किए गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस आदि ने अपनी किताबों में नव परिवर्तन के नए-नए आयामों तथा जीवन शैली के सत्य के साथ प्रयोग को एक नया आयाम दिया है और भारत देश को नए स्वरूप में विश्व में पहचान दिलाई है। पाश्चात्य ज्ञान से हमें अपने आडंबर एवं अंधविश्वास तथा शिक्षा पर विजय प्राप्त करने में काफी मदद प्राप्त हुई है। भारतीय संस्कृति की कई भ्रांतियों को भी हमने ज्ञान तथा भाषा के नवीन प्रयोगो से समाज से दूर किया है।

दिन प्रतिदिन जीवन की कार्यशैली में हम यह महसूस करते हैं कि शिक्षा भाषा तथा ज्ञान हमें यह महसूस कर आते हैं कि हम अभी तक कितने पीछे हैं एवं हमें कितने ज्ञान की और आवश्यकता है। हालांकि ज्ञान का कोई और झोर नहीं होता, ज्ञान तथा भाषा एक समृद्ध भंडार है, उसमें आप जितना सीख सकते हैं ज्ञान ले सकते हैं वह अत्यंत लघु होता है। तो हमेशा हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम पल प्रतिपल कुछ ना कुछ हर व्यक्ति,हर समाज,हर सभ्यता से सीखने का प्रयास करें,क्योंकि ज्ञान भाषा एवं संस्कृति हमें सदैव समृद्ध विकासशील एवं परिवर्तनशील बनाती है और परिवर्तनशील जीवन ही एक नई ऊर्जा,आशा और विकास को जन्म देती है।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

कविता
भ्रम

घटती-घटना
राजेन्द्र लाहिरी
पामगढ़
छत्तीसगढ़

न रहिये भ्रम में कि
कोई चोर,लुटेरा या डाकू
आपके लिए एक नया सवेरा लाएगा,
तुम्हें बातों में उलझाकर
तुम्हारा सब कुछ पुनःले जाएगा,
कई महापुरुष कहते कहते थक गए
कि अपना दीपक खुद बनो,
इंसान पूरे शुद्ध बन राह अपनी खुद चुनो,
जातियों और धर्मों से भरे संसार में
सब एक दूसरे से नफरत वाले हैं,
जब,जहां,जिसको मिला मौका
खुलकर अपनी खुन्नस निकालें हैं,
मतलब नहीं किसी को किसी के
आंतरिक भावनाओं की,
पुरूष धज्जियां उड़ा देता है
माता,पत्नी व पुत्री के कामनाओं की,
निकलना होगा भ्रम से महिलाओं को,
स्वयं लड़ना होगा और दूर करना होगा
आ धमकते बलाओं को,
मन को करना ही होगा इतना मजबूत
कि पास बिल्कुल न फटके भ्रम,
चलना होगा अपनी राह
अपनी जरूरतों को देते हुए क्रम,
तोड़ो मानसिक गुलामी जो एक षड़यंत्र है,
खुद ही खोजो उसे जो आगे बढ़ने
का मंत्र है।

कविता
खुद के लिए होती है

घटती-घटना
चंद्रकांत खुटे
जांजगीर-चांपा
छत्तीसगढ़

वो बोल रहा है अनाप-शनाब,
कुछ भी अनर्गल
किंतु लोग सुनने में मदमस्त है
वो बोलता है,
भाषण देता है
तरह-तरह की बातें करता है
लोक-लुभावने वादे करता है
वचन देता है
कर्म करने की गारंटी देता है
लोग सही समझ लेते हैं
विश्वास कर लेते हैं
उनका दिया हुआ भाषण
वादे,वचन,गारंटी,जनताओं के लिए है
किंतु उनके सभी बातें
खुद के लिए होती है
जिसे जीतने के बाद
वह सिद्ध भी करता है
तभी तो अपनी जेब भरता है
जनहित के विपरित कार्य करता है ।।

भारत में वस्त्र क्षेत्र की क्रांतिः एक उदीयमान उपभोक्ता पावरहाउस की गाथा

.....समृद्ध भारत का उदयएक दशक पूर्व भारत की जनसंख्या लगभग 125 करोड़ थी। उपभोक्ताओं का खर्च मुख्य रूप से इच्छा के बजाय आवश्यकता से प्रेरित होता था। खरीदारी का पूर्वानुमान लगाना बहुत ही आसान था। त्योहारों के लिए नए कपड़े, सावधानीपूर्वक योजना आधारित खर्च और फिजूलखर्ची की बजाय बचत पर ध्यान केंद्रित किया जाता था। लक्जरी ब्रांडों की दूर से प्रशंसा की जाती थी। उच्च श्रेणी का फैशन अभिजात वर्ग तक ही सीमित था। आज देश की जनसंख्या लगभग 142 करोड़ हो गई है। मध्यम वर्ग तेजी से बढ़त की ओर है। वही परिवार पूरे आत्मविश्वास से प्रीमियम स्टोर में कदम रखता है। वही परिवार आसानी से ऑनलाइन खरीदारी करता है। इतना ही नहीं, अपने जीवन में अनेक अवसरों को उत्सव के तौर पर देखता है। भारत अब न केवल आगे बढ़ रहा है, बल्कि यह समृद्ध भी हो रहा है। बढ़ती क्रय शक्ति, विकसित हो रही उपभोक्ता मानसिकता और अंतिम-मील डिजिटल कनेक्टिविटी ये तीनों इस बदलाव के मुख्य वाहक हैं। आर्थिक सुधार अभूतपूर्व रहा है। इसे बढ़ती आय, सरकार समर्थित विनिर्माण पहल और डिजिटल रूप से सशक्त भारत के माध्यम से पंख लगे हैं। 2020 में आत्मनिर्भर भारत योजना शुरू की गई। इस विजन ने आत्मनिर्भरता की नींव रखी। इसे प्रोडक्शन-लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना और पीएम मित्र टेक्सटाइल पार्कों द्वारा और सशक्त किया गया। जैसे-जैसे विनिर्माण में उछाल आया, रोजगार सृजन हुआ और इसके साथ ही डिस्पोजेबल आय में वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप भारतीयों के खर्च करने के तरीके बदल गए। उपभोग अब भारत के विकास की गाथा के केंद्रमें है, जो कपड़ा क्षेत्र को स्वर्ण युग में ले जाने के लिए तैयार है। एक सशक्त भारत आत्मविश्वास से परिपूर्ण,साहसी और आकांक्षी पिछले कई वर्षों में, आकांक्षाएं सचमुच वास्तविकता से आगे निकल गईं। लोगों ने कड़ी मेहनत की, बड़े सपने देखे, फिर भी अवसर पहुंच से बाहर लगे। फिर नीति-संचालितपरिवर्तन के एक दशक ने महत्वाकांक्षा को उपलब्धि में बदल दिया। इन्फ्रास्ट्रक्चर का विस्तार हुआ, डिजिटल इंडिया ने आकार लिया और आर्थिक सुधार मूर्त विकास का इंजन बन गए। इसके प्रभाव से भारत एक गुणवत्ता, शैली और सुविधा को अपनाने के लिए तैयार आत्मविश्वासी उपभोक्ताओं वाले देश के रूप में विकसित हो गया। यह बढ़ती समृद्धि फैशन, कपड़ा और जीवन शैली वाले उत्पादों की अभूतपूर्व मांग को बढ़ावा दे रही है। 2027 तक, भारत चौथा सबसे बड़ा उपभोक्ता टिकाऊ बाजार होगा, जो न केवल सामर्थ्य बल्कि आकांक्षाओं से प्रेरित होगा।

-श्री गिरिराज सिंह-

मिशन-2027 की तैयारी बीजेपी यूपी में नया चेहरा लाने की तैयारी

अजय कुमार
लखनऊ,उत्तरप्रदेश

उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव भले ही दो साल बाद होने वाले हों, लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने अभी से अपनी रणनीति पर काम करना शुरू कर दिया है। 2024 के लोकसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश में बीजेपी की सीटों में आई कमी ने पार्टी नेतृत्व को सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर राज्य में जनाधार कैसे मजबूत किया जाए और 2027 में सत्ता की हैट्रिक कैसे बनाई जाए। इसी को ध्यान में रखते हुए बीजेपी संगठन में बड़े बदलाव की तैयारी कर रही है। हाल ही में 70 जिला और महानगर अध्यक्षों के नामों की घोषणा के बाद अब प्रदेश अध्यक्ष के चयन पर मंथन शुरू हो चुका है। पार्टी मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी की जगह ऐसे चेहरे की तलाश कर रही है, जो न केवल संगठन को मजबूत कर सके, बल्कि 2027 के विधानसभा चुनाव में पार्टी की जीत की राह भी आसान बना सके।

बीजेपी के संविधान के अनुसार, प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव तब किया जा सकता है जब 50 प्रतिशत से अधिक जिलाध्यक्षों की नियुक्ति हो चुकी हो। इस बार 71 प्रतिशत से अधिक जिलाध्यक्षों की नियुक्ति हो चुकी है, जिससे प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव का रास्ता साफ हो गया है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल को उत्तर प्रदेश में अध्यक्ष चुनाव के लिए चुनाव अधिकारी बनाया गया है और वे जल्द ही लखनऊ का दौरा कर सकते हैं। पार्टी का पूरा ध्यान ऐसे नेता को प्रदेश अध्यक्ष बनाने पर है, जो पार्टी संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने के साथ ही केंद्र और राज्य सरकार के बीच बेहतर तालमेल स्थापित कर सके।

उत्तर प्रदेश की सियासी तस्वीर को देखें तो बीजेपी ने 2017 और 2022 के विधानसभा चुनाव ओबीसी वर्ग से आने वाले नेताओं की अगुवाई में लड़े थे। 2017 में केशव प्रसाद मौर्य और 2022 में स्वतंत्र देव सिंह को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया था और दोनों चुनावों में पार्टी को प्रचंड बहुमत मिला था। इसी वजह से माना जा रहा है कि इस बार भी पार्टी किसी ओबीसी या ब्राह्मण चेहरे को प्रदेश अध्यक्ष बना सकती है। यह इसलिए भी जरूरी हो गया है क्योंकि लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी ने पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक (पीडीए) गठजोड़ के सहारे बीजेपी को तगड़ी चुनौती दी थी और कई सीटों पर बढ़त हासिल की थी।

उत्तर प्रदेश में जातीय समीकरण का राजनीति पर गहरा असर पड़ता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ठाकुर समुदाय से आते हैं और पूर्वांचल में उनकी गहरी पकड़ है। ऐसे में बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष के रूप में किसी अन्य जातीय समूह के नेता को सामने लाकर संतुलन बनाने की कोशिश करेगी। चर्चा में आए संभावित नामों में पशुपालन मंत्री धर्मपाल सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री बीएल वर्मा, जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह, पूर्व सांसद हरीश द्विवेदी और पूर्व उपमुख्यमंत्री दिनेश शर्मा शामिल हैं। इनमें से धर्मपाल सिंह और बीएल वर्मा ओबीसी समुदाय से आते हैं, जबकि दिनेश शर्मा ब्राह्मण समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं।

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष का चयन सिर्फ जातीय समीकरण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें संगठनात्मक कुशलता भी एक महत्वपूर्ण कारक है। 2027 का चुनाव बीजेपी के लिए बेहद अहम है, क्योंकि पार्टी को लगातार तीसरी बार सत्ता में आने के लिए विपक्ष के मजबूत गठबंधन से मुकाबला करना होगा। समाजवादी पार्टी, कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल राज्य में बीजेपी के खिलाफ एकजुट होने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे में पार्टी को ऐसे प्रदेश अध्यक्ष की जरूरत है, जो चुनावी रणनीति को सही दिशा में ले जा सके और पार्टी कार्यकर्ताओं को सक्रिय कर सके।

प्रदेश अध्यक्ष के रूप में ऐसा चेहरा तलाशा जा रहा है, जो सरकार और संगठन के बीच संतुलन बनाए रख सके। पिछले कुछ वर्षों में संगठन और सरकार के बीच सामंजस्य को लेकर कई बार सवाल उठे हैं। डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने भी कई बार यह बयान दिया कि संगठन सरकार से बड़ा है और कार्यकर्ताओं की आवाज सुनी जानी चाहिए। कार्यकर्ताओं के बीच यह धारणा बनी थी कि योगी सरकार में उनकी सुनवाई कम हो रही है और नौकरशाही का दखल बढ़ गया है। ऐसे में बीजेपी को ऐसे नेता की जरूरत है, जो न केवल संगठन को मजबूत करे, बल्कि सरकार और संगठन के बीच किसी भी तरह के टकराव को भी रोके।

प्रदेश अध्यक्ष के चयन में दिल्ली और लखनऊ के बीच संतुलन भी एक महत्वपूर्ण कारक है। बीजेपी का केंद्रीय नेतृत्व चाहता है कि प्रदेश अध्यक्ष ऐसा हो, जो केंद्रीय नेतृत्व के निर्देशों को समझे और उन पर अमल करे, लेकिन साथ ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ भी अच्छे तालमेल के साथ काम करे। इससे पहले स्वतंत्र देव सिंह को प्रदेश अध्यक्ष इसलिए बनाया गया था क्योंकि उनका योगी सरकार के साथ अच्छा तालमेल था। लेकिन भूपेंद्र चौधरी के कार्यकाल में संगठन और सरकार के बीच सामंजस्य को लेकर कई बार सवाल उठे। इसीलिए नए प्रदेश अध्यक्ष के रूप में किसी ऐसे नेता की तलाश की जा रही है, जो सत्ता और संगठन के बीच बेहतर तालमेल बिठा सके और कार्यकर्ताओं को सक्रिय कर सके।

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा। -सम्पादक

C M Y K

AMBIKAPUR GG PAPER 20 MARCH 2025_Layout 2 3/20/2025 1:58 AM Page 3

सेंट्रल जेल में जांच के दौरान मिला मोबाइल व आपतिजनक सामान

- संवाददाता -
अंबिकापुर, 19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

सेंट्रल जेल अंबिकापुर आए दिन सुर्खियों में बना रहता है। पूर्व में यहां कई बड़े कांड हो चुके हैं। इसी बीच 17 मार्च को जेल अधीक्षक योगेश सिंह ने जेल के बैरकों की जांच की। इस दौरान वहां कई प्रतिबंधित सामान मिले। जांच के दौरान सूरजपुर दोहरा हत्याकांड के आरोपी कुलदीप साहू के बैरक के टॉयलेट में मोबाइल व गांजा मिला। इसी बैरक में दुर्ग का कुख्यात बदमाश दीपक नेपाली भी रहता है। दीपक नेपाली को महादेव सट्टा ऐप से जुड़े मामले में रायपुर के जेल से अंबिकापुर सेंट्रल जेल में 4 महीने पहले शिफ्ट किया गया था। कुख्यात बदमाशों के पास मोबाइल मिलने के बाद जेल प्रबंधन में हड़कंप मचा हुआ है। कुख्यात बदमाशों के बैरक में मोबाइल व गांजा किस माध्यम से पहुंचा,इसकी अधीक्षक द्वारा जांच की जा रही है। बताया जा रहा है कि मुलाकातियों द्वारा इन प्रतिबंधित सामान को जेल में बदमाशों तक पहुंचाया गया है। इस कार्य में सेंट्रल जेल के 2 प्रहरियों की भूमिका संदिग्ध बताई जा रही है। सूत्रों के अनुसार मोबाइल व गांजा मिलने के बाद आरोपी कुलदीप साहू व दीपक नेपाली को जेल के सेल में शिफ्ट कर दिया गया है। सेंट्रल जेल अंबिकापुर के अधीक्षक योगेश सिंह का कहना है कि 17 मार्च को बैरकों की जांच की गई थी। इस दौरान एक मोबाइल व अन्य प्रतिबंधित सामान मिला है। किस माध्यम से ये सामान यहां पहुंचे, इसकी जांच कर रहे हैं। जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

नवनिर्वाचित जिला पंचायत सदस्य ने क्षेत्र का किया दौरा

- सवाददाता -
अंबिकापुर,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ राज्य युवा आयोग के अध्यक्ष विश्व विजय सिंह तोमर व जिला पंचायत क्षेत्र क्रमांक 2 की नवनिर्वाचित जिला पंचायत सदस्य पायल सिंह तोमर ने विभिन्न ग्रामों का दौरा किया और वहां की समस्याओं से अवगत हुए। अंबिकापुर जिला पंचायत क्षेत्र क्रमांक 2 के ग्राम फतेहपुर, सपना ,सुखरी,रनपुर,बांकीपुर,बकिरमा ग्राम में निर्वाचन उपरांत विश्व विजय सिंह तोमर एवं जिला पंचायत सदस्य पायल सिंह तोमर निर्वाचन पश्चात क्षेत्र भ्रमण पर पहुंचे। ग्रामीणों ने अपनी समस्याये बताई तथा कई मांगे रखी। गर्मी में पेयजल की समस्या सामने आई है, इन समस्याओं के त्वरित निराकरण का भरोसा दिया तथा ग्रामीणों के अभूतपूर्व स्वागत एवं चुनाव में समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि ग्रामीणों के अपार स्नेह के प्रति हम कृतज्ञ हैं तथा ग्रामीण जन के साथ हर समस्या का समाधान करने की कोशिश करेंगे।

युवा आयोग के अध्यक्ष विश्व विजय सिंह तोमर ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि आपकी जो भी समस्या होगी उसका निराकरण करना मेरी प्राथमिकता में है। पेयजल की समस्या दूर करने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने जल जीवन मिशन योजना लागू की है। एक-एक कर हर गांव में शुद्ध पेयजल पहुंचने लगा है। आपके गांव में भी यह योजना चल रही है। इसका क्रियान्वयन बेहतर तरीके से हो इसका प्रयास हम कर रहे हैं।आपके द्वार तक शुद्ध पेयजल पहुंचना हमारी सरकार की प्राथमिकता में है। ग्रामीण क्षेत्र की सडक़ों का निर्माण भी आने वाले दिनों में समग्र तरीके से होगा।

जिला पंचायत सदस्य पायल सिंह तोमर ने कहा कि आप सभी के आशीर्वाद से मुझे जिला पंचायत सदस्य निर्वाचित होने का गौरव प्राप्त हुआ है। आप लोगों की समस्याओं को दूर करना अब मेरी जिम्मेदारी है। गांव की छोटी-छोटी समस्याएं हर हाल में दूर होनी चाहिए। आप लोग निरंतर साथ देते रहें।आपके विश्वास पर हम लोग खरा उतरने का प्रयास करेंगे।इस दौरान अंबिकापुर ग्रामीण मंडल अध्यक्ष विवेक सिंह सेंगर, महिला मोर्चा की जिला महामंत्री सोनू तिग्गा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन भाजयुमो अंबिकापुर ग्रामीण के मंडल अध्यक्ष दिगंबर यादव ने किया। इस अवसर पर सुधाकर मिश्रा,अंजनी दुबे, महामंत्री संजय राजवाड़े, डोमन राजवाड़े, सागर विश्वकर्मा,आगर साय राजवाड़े,राजू सिंह,आदित्य सिंह, विनय ठाकुर मुकेश गुप्ता, रायत राम पावले,मटुक दास महंत,टीकम यादव,मैनेजर सिंह, धीरन सिंह के साथ सरपंच,उप सरपंच तथा बड़ी संख्या में ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

लांछन लगाकर आत्महत्या के लिए प्रेरित करने के मामले में केस दर्ज

- संवाददाता -
अंबिकापुर,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

कोतवाली थाना क्षेत्र की एक विवाहिता ने राजस्थान के एक व्यक्ति पर फोन करके चारित्रिक लांछन लगाकर मानसिक रूप से प्रताड़ित करने और जान से मारने की धमकी देने की रिपोर्ट थाने में दर्ज कराई है। रिपोर्ट पर पुलिस आरोपी के विरूद्ध केस दर्ज कर ली है और अग्रिम वैधानिक कार्रवाई कर रही है।

विवाहिता ने पुलिस को बताया है कि सिक्कर राजस्थान के इदका रोड वार्ड क्रमांक-2 का शाहरूख राइन पिता अहमद राइन 27 वर्ष उसे अलग-अलग मोबाइल नंबर से फोन करके परेशान कर रहा है, जिस कारण वह अपना फोन नंबर बंद कर दी है। इसके बाद उक्त युवक उसके पति को लगातार फोन करके अनर्गल और अमर्यादित बातें करके सारे कान्टेक्ट को फोन करके अश्लील वीडियो भेजने की धमकी देने में लगा है। यही नहीं आरोपी के द्वारा उसके पति को वीडियो कॉल करने के लिए बाध्य किया जा रहा था। उसकी बातों को सुनकर जब उसके पति ने गाली-गलौज किया तो वह उसके पति के दोस्त को फोन करके अमर्यादित बातें बताने लगा। आरोपी के द्वारा लगातार विवाहिता के कान्टेक्ट नम्बरों पर कॉल करने और उसके खिलाफ गंदी व अश्लील बातें की जा रही है, जिससे वह मानसिक पीड़ा झेल रही है। मोबाइलधारक के नम्बर को उसके पति व परिचितों, संबंधियों के द्वारा ब्लॉक करने पर वह अलग-अलग नम्बरों से उन्हें फोन करने जैसी हरकतें करने में लगा है। इस प्रकार की मानसिक प्रताडना से तंग आकर विवाहिता खुदकुशी करने का प्रयास भी कर चुकी है, लेकिन पति ने उसे ऐसा करने से रोका। विवाहिता का कहना है संबंधित युवक के द्वारा उसके तलाक देने या जान से मार देने के लिए उकसाने का प्रयास भी किया गया। आरोपी के द्वारा बात नहीं करने पर विवाहिता को जान से मार देने की धमकी भी दी गई है। रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपी के विरूद्ध केस दर्ज कर लिया है और अग्रिम वैधानिक कार्रवाई करते हुए उसके तलाश में जुट गई है।

पत्नी का हाथ-पैर बांधकर बसुला से जनलेवा हमला, आरोपी पति गिरफ्तार

- संवाददाता -
अंबिकापुर,19 मार्च 2025 (घटती-घटना)।

हत्या करने के नियत से पत्नी का हाथ-पैर बांधकर बसुला से जानलेवा हमला करने के मामले में दरिमा पुलिस ने आरोपी पति को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है।

जानकारी के अनुसार सावन मोहनी ग्राम करम्हा थाना दरिमा के रहने वाली है। वह 13 मार्च को दरिमा थाना में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। वह पुलिस को बताया कि मेरा बेटा रामलाल 13 मार्च की शाम को अपनी पत्नी पवन कुमारी से लड़ाई झगड़ा कर रहा था। इस दौरान रामलाल ने पत्नी की हत्या करने के नियत से उसका हाथ-पैर बांधकर बसुला से बाएं पैर एवं सिर में हमला कर दिया। इससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गई थी। उसे इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पीड़िता के सास की रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है।

डॉयल 112 वाहन से एमडीटी और वायरलेस सेट चोरी

- संवाददाता -
अंबिकापुर,19 मार्च 2025 (घटती-घटना)।

खरसिया नाका के पास बाम्बे डीजल गैरेज में खड़ी आपातकालीन डॉयल 112 वाहन से एमडीटी और वायरलेस सेट अज्ञात लोगों ने पार कर दिया। घटना की रिपोर्ट कोतवाली थाना में दर्ज कराई गई है, जिस पर पुलिस मामला दर्ज करके अग्रिम कार्रवाई कर रही है।

नवागढ इमाम बाड़ा चैक के पास रहने वाला गैरेज संचालक फरीद फिरदौसी ने रिपोर्ट दर्ज कराया है कि पुलिस विभाग में संचालित डॉयल 112 वाहनों के मरम्मत हेतु एबीपी ट्रेवल एंड फैसिलिटी मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड के मध्य अनुबंध हुआ है। वह सरगुजा जिले में संचालित डॉयल 112 वाहनों के मरम्मत का काम करता है। 8 मार्च को दोपहर करीब 11-12 बजे उसके गैरेज में डॉयल 112 रिजर्व शेर-1 वाहन क्रमांक सीजी 03-7251 को वायरिंग, डोर ग्लास व पीछे का लॉक मरम्मत के लिए छोड़ा गया था। उक्त वाहन गैरेज के बाहर ही खड़ी थी। 14 मार्च को पता चला कि उक्त वाहन से एमडीटी, मोबाईल डेटा टर्मिनल व वायरलेस सेट कोई चोरी कर लिया है। इसकी सूचना कंपनी के जिला प्रबंधक को मोबाइल से वे दिया था, इसके बाद जिला प्रबंधक अजय कुमार मण्डावी उसके गैरेज में 17 मार्च को आए थे और निरीक्षण करके उन्होंने उक्त सामानों का नहीं होना बताया। गैरेज के सामने स्थित ड्रीम मोटर्स के सीसीटीव्ही कैमरा को देखने पर पता चला कि 9 मार्च को रात करीब 10.15 बजे डॉयल 112 वाहन से उक्त सामान अज्ञात व्यक्ति चोरी करते कैद हुआ है। रिपोर्ट पर पुलिस ने अज्ञात के विरूद्ध केस दर्ज कर लिया है।

घर के अंदर बच्चों को बंद करके दंपती ने की मारपीट

- संवाददाता -
अंबिकापुर, 19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

कोतवाली थाना क्षेत्र के भट्ठी रोड, त्रिकोण चैक के पास रहने वाले दंपती द्वारा बच्चों से गालीगलौज व मारपीट करके घर के अंदर बंद कर देने का मामला प्रकाश में आया है। घटना की रिपोर्ट थाने में दर्ज कराई गई है, जिस पर पुलिस ने आरोपियों के विरूद्ध केस दर्ज कर लिया है।

मालू तिर्की ने पुलिस को बताया है कि 17 मार्च को शाम करीब 7 बजे वह काम करने के लिए अस्पताल गई थी। रात करीब 8.40 बजे पड़ोसी ने फोन करके बताया कि तुम्हारे लडक़े को राजू दास और उसकी पत्नी अपने घर मे बंद करके मारपीट किए हैं। जब वह राजु दास के घर गई तो उसके घर का दरवाजा बाहर से बंद था और उसकी पत्नी घर के बाहर खड़ी थी। जब वह उससे अपने पुत्र आशीष तिर्की के बारे में पूछी और उससे घर का दरवाजा खुलवाई तो अंदर उसके पुत्र आशीष तिर्की के साथ लक्ष्य पटेल बंद थे। जब वह अपने पुत्र से पूछताछ की तो वह बताया कि राजू दास का लडक़ा रवि दास कहीं घूमने चले गया है,इसी बात को लेकर राजू दास व उसकी पत्नी गालीगलौज व अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने घर के कमरे में बंद कर दिया और हाथ, मुक्का व पटरा से मारपीट किए हैं। इन्हें लडक़े के घर वापस नहीं आने पर मारकर गाड़ देने की धमकी दी गई थी। लडक़े को लेने गई मालू तिर्की के साथ भी राजू दास की पत्नी गाली-गलौज की, इसके बाद वह अपने पुत्र आशीष को घर लेकर आ गई। रिपोर्ट पर पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 115(2), 127(2), 296, 3(5), 351(3) का मामला दर्ज कर लिया है।

डंडे से पीट-पीटकर पत्नी की हत्या,आरोपी गिरफ्तार

- संवाददाता -
अंबिकापुर, 19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

कमलेश्वरपुर थाना क्षेत्र के ग्राम अमगांव ढोढ़ाडीह निवासी एक व्यक्ति ने 17 मार्च की सुबह चरित्रशंका पर डंडे से पीट पीटकर पत्नी की हत्या कर दी थी। इसके बाद वह लोगों को गुराह करने के लिए बैल चराने चला गया और दोपहर तीन बजे वापस आकर कमलेश्वरपुर थाने में रिपोर्ट भी दर्ज करा दी। पीएम रिपोर्ट व जांच के बाद पुलिस ने आरोपी पति को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है। जानकारी के अनुसार जंगल साय पिता तिग्गा उम्र 53 वर्ष कमलेश्वरपुर थाना क्षेत्र के ग्राम अमगांव ढोढ़ाडीह का रहने वाला है। वह अपनी पत्नी 48 वर्षीय लालो बाई पर चरित्रशंका करता था। चरित्रशंका को लेकर अक्सर पत्नी के साथ मारपीट करता था। 17 मार्च की सुबह 3 बजे चरित्रशंका को लेकर पत्नी के साथ विवाद करने लगा। विवाद के दौरान जंगल साय ने गुस्से में आकर डंडे से पत्नी की बेदम पिटाई कर दी। इससे उसकी मौत हो गई। घटना को अंजाम देने के बाद जंगल साय खाना खाया और सुबह 10 बजे बैल चराने चला गया। जंगल साय दोपहर तीन बजे मवेशी चराकर घर आया और कमलेश्वरपुर पुलिस को बताया कि वह सुबह 10 बजे खाना खाने के बाद बैल चराने चला गया था। दोपहर तीन बजे घर लौटा तो घर का दरवाजा खुला था। परछी में उसकी पत्नी की लाश पड़ी थी और घटनास्थल पर खून के निशान थे। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंचकर मामले की जांच की। पुलिस ने शव का पीएम करवाया। पीएम रिपोर्ट में डंडे से पीटकर हत्या किए जाने की पुष्टी हुई। घटनास्थल को देखने व संदेह पर पुलिस ने मृतका के पति जंगल साय हो हिरासत में लेकर सख्ती से पूछताछ की तो वह अपना जुर्म कबूल कर लिया। वह पुलिस को बताया कि चरित्रशंका पर डंडे से पीटपीट कर पत्नी की हत्या करने की बात स्वीकार की और पुलिस को गुमराह करने झूठी कहानी रची थी। मामले में पुलिस ने आरोपी जंगल साय तिग्गा उम्र 53 वर्ष के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है।

हाईवा के चपेट में आने से बच्चे की मौत

- संवाददाता -
अंबिकापुर,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

क्रेशर के पास खेल रहे बच्चे की हाईवा की चपेट में आने से मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि बलरामपुर जिला के राजपुर थाना अंतर्गत ग्राम लाऊ निवासी जीवत गोड़ का डेढ़ वर्षीय पुत्र प्रिंस,18 मार्च को अपरान्ह लगभग 3 बजे हुकुम सिंह के क्रशर के पास खेल रहा था। इसी दौरान गिट्टी परिवहन कार्य के उपयोग में आने वाले हाईवा क्रमांक सीजी 15 एसी 2895 का चालक वाहन को बैक करने लगा और बच्चे के जांघ पर हाईवा का चक्का चढ़ गया। बच्चे के रोने की आवाज सुनकर आसपास मौजूद लोग व स्वजन पहुंचे। घायल बच्चे को बरियों स्वास्थ्य केन्द्र से रेफर करने पर स्वजन मेडिकल कॉलेज अस्पताल अंबिकापुर लेकर पहुंचे, यहां जांच के बाद चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मामले में मर्ग कायम किया है। बच्चे के शव को पोस्टमार्टम के बाद स्वजन को सौंप दिया गया है।

बैलों के हमले में घायल महिला की मौत

- संवाददाता -
अंबिकापुर,19 मार्च 2025 (घटती-घटना)।

बैलों की लड़ाई छुड़ाने के लिए गई अधेड़ महिला पर एक बैल ने हमला कर दिया, जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गई थी, इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक सूरजपुर जिला के ग्राम लोधिमा बसदेई की धनेश्वरी सिंह पति लक्ष्मण सिंह 50 वर्ष, बुधवार को घर के बाहर दो बैलों को लड़ते देखकर इनका लड़ाई छुड़ाने के लिए गई थी। इसी दौरान बैल के हमला में वह घायल हो गई। सूरजपुर अस्पताल से रेफर करने पर स्वजन उसे मेडिकल कॉलेज अस्पताल अंबिकापुर में भर्ती कराए थे, यहां इलाज के दौरान बुधवार को उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मृतिका के शव को पोस्टमार्टम के बाद स्वजन को सौंप दिया है।

अस्पतालों में फायर सेफ्टी की पड़ताल,चौंकाने वाला खुलासा

» सरगुजा के अस्पतालों में आगजनी से बचाव को लेकर फायर एंड सेफ्टी विभाग ने जांच की,जिसमें चौंकाने वाला खुलासा हुआ

» सरगुजा के अस्पतालों में फायर सेफ्टी

- संवाददाता -
अंबिकापुर,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

फॉयर एंड सेफ्टी विभाग के स्टेशन प्रभारी अंजनी तिवारी ने बताया कि सरगुजा के अस्पतालों और नर्सिंग होम में फायर सेफ्टी को लेकर जांच की गई. इस जांच के लिए तीन अलग अलग विभाग की टीम बनाई। इस दौरान पूरे जिले के 48 अस्पताल व नर्सिंग होम में टीम पहुंची और आगजनी से बचाव के लिए अपनाने वाले उपायों के बारे में जानकारी ली गई. लेकिन ज्यादातर अस्पतालों में सुरक्षा उपाय नाकाफी मिले।

दरअसल गर्मी के दिनों में बिजली का लोड बढ़ने के बाद शॉर्ट सर्किट से आगजनी की घटनाएं बढ़ जाती है। सरगुजा में गर्मी शुरू होने से पहले अस्पतालों और नर्सिंग होम की जांच के लिए 3 सदस्यीय टीम बनाई गई। जिसमें फायर एंड सेफ्टी विभाग के अलावा स्वास्थ्य विभाग और बिजली विभाग से एक एक सदस्य को रखा गया। जिले के सभी 48 अस्पताल व नर्सिंग होम की जांच की गई। इस जांच में टीम को 37 संस्थानों में फायर सेफ्टी को लेकर गड़बड़ी मिली। जिसकी रिपोर्ट उच्च अधिकारियों को भेजी गई है।

सरगुजा के अस्पतालों में फायर सेफ्टी

जिला अस्पताल में फायर सेफ्टी की हालत खराब-स्टेशन प्रभारी अंजनी तिवारी ने बताया कि 48 अस्पताल व नर्सिंग होम की जांच में एक अस्पताल में कार्य प्रगति पर मिला। 10 में फायर सेफ्टी के नियम संतोष जनक मिले,बाकी के सभी 37 संस्थानों में गड़बड़ी देखने को मिली। उन्होंने बताया कि किसी के पास एनओसी नहीं है,कहीं सीढ़ी सकरी है,कहीं फायर एग्जिट नहीं है तो कहीं गैस एक्सपायर थी,कहीं बिल्डिंग ही सकरी गली में है,जहां फायर ब्रिगेड की गाड़ी नहीं पहुंच सकती है। जांच के बाद रिपोर्ट उच्च अधिकारियों को भेज दिया गया है।

सरगुजा के अस्पतालों में फायर सेफ्टी का सच

जिला अस्पताल में अग्निशमक यंत्रों की संख्या जरूर बढ़ाई गई लेकिन संतोष जनक स्थिति नहीं है। कई कमिया हैं। अस्पताल को बढ़ाया जा रहा है उस हिसाब से अग्निशमक यंत्र नहीं है- अंजनी तिवारी,स्टेशन प्रभारी,फायर एंड सेफ्टी विभाग स्वास्थ्य विभाग के जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ पुष्पेन्द्र राम ने बताया कि नर्सिंग होम एक्ट शाखा की बैठक में इस दिशा में निर्देश जारी किये हैं। क्योंकि गर्मी आ चुकी है और इलेक्ट्रिसिटी का लोड बढ़ने से शॉर्ट सर्किट से आगजनी हो सकती है। सभी को तुरंत व्यवस्था सुधारने के निर्देश दिए है। निर्देश देने के बाद भी कार्रवाई नहीं होने पर एक्शन लिया जाएगा।

सरगुजा मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी

आपातकालीन सेवा से मामला जुड़ा होने के कारण यदि निर्देश देने के बाद भी लापरवाही मिलती है तो इसमें कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

डॉ पुष्पेन्द्र राम,जिला कार्यक्रम प्रबंधक,स्वास्थ्य विभाग

अग्नि शमन विभाग ने जांच के बाद जो रिपोर्ट तैयार किया है उसकी लंबी लिस्ट है। क्योंकि उसमे जिले के सभी 48 संस्थानों की सूची है। लेकिन इस रिपोर्ट में बड़ी बात ये है कि निजी अस्पताल के अलावा कुछ छोटे सरकारी अस्पताल सहित मेडिकल कॉलेज अस्पताल तक में फायर सेफ्टी के पालन में कमियां मिली है। अब देखना होगा की समय रहते व्यवस्था में सुधार किया जाता है या नहीं।

AMBIKAPUR GG PAPER 20 MARCH 2025_Layout 2 3/20/2025 1:58 AM Page 4

सुनीता विलियम्स धरती पर लौटीं, स्पेसएक्स क्रू ड्रैगन की फ्लोरिडा तट पर सफल लैंडिंग

नई दिल्ली, 19 मार्च 2025। भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स, जो 286 दिन तक अंतरिक्ष में रहकर विभिन्न मिशनों का हिस्सा बनीं, सफलतापूर्वक पृथ्वी पर वापस लौट आई हैं। नासा के अनुसार, सुनीता और उनके साथी अंतरिक्ष यात्री बैरी विल्मोर को लेकर लौट रहा यान फ्लोरिडा के समुद्र तल पर तड़के 3:27 बजे सुरक्षित रूप से उतरा। इस महत्वपूर्ण मिशन में नासा के साथ एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स का भी अहम योगदान था।

सुनीता की सकुशल वापसी के लिए उनके परिजनों ने भारत में पूजा-अर्चना और यज्ञ-हवन किए, जबकि गुजरात में अखंड ज्योति जलाकर उनकी सुरक्षित वापसी की कामना की गई।

स्पेसएक्स के ड्रैगन कैप्सूल के सुरक्षित लैंडिंग के बाद, नासा और स्पेसएक्स के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों ने मिलकर इस

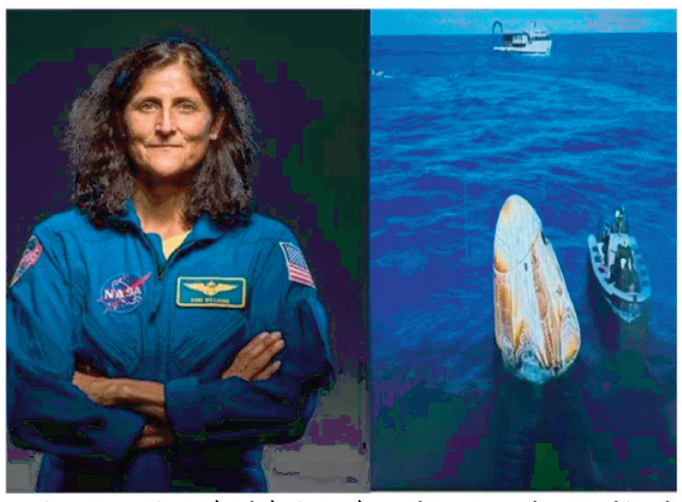

उपलब्धि का स्वागत किया, और इसे वैज्ञानिक भाषा में सफल स्प्लैशडाउन बताया। जैसे ही कैप्सूल ने समुद्र तल को छुआ,फ्लोरिडा में उपस्थित सभी ने इस ऐतिहासिक सफलता का ताली बजाकर स्वागत किया।

सुनीता विलियम्स का भारत से गहरा कनेक्शन है, खासकर उनके पिता के जरिए। उनका जन्म 19 सितंबर 1965 को अमेरिका के ओहायो राज्य के यूक्लिड शहर में हुआ था। उनके पिता, दीपक पांड्या, गुजरात के मेहसाणा जिले से हैं। वे एक न्यूरोएनाटॉमी विशेषज्ञ थे और 1957 में अमेरिका गए थे, जहां उन्होंने बसने का निर्णय लिया। यहां उन्होंने उर्सलीन बॉनी से विवाह किया, जो कि स्लोवेनिया की मूल निवासी थीं।

सुनीता विलियम्स का पैतृक घर गुजरात के झूलासन में है, जो उनके भारतीय कनेक्शन को और मजबूत करता है। वहीं, उनका ननिहाल स्लोवेनिया में है, जिससे सुनीता का एक अंतरराष्ट्रीय परिवार है। इस मिश्रित पृष्ठभूमि ने उन्हें एक वैश्विक पहचान दिलाई, और वह आज भी दोनों देशों के बीच एक मजबूत पुल के रूप में जानी जाती हैं।

सुनीता विलियम्स की घर वापसी कराने के बाद एलन मस्क के लिए सिर दर्द बना ये मामला

बोले- पागलपन भरी हरकत...

एलन मस्क की टेस्ला कारों में लगाई गई आग

» डोनाल्ड ट्रंप ने जांच का दिया आदेश...

नई दिल्ली,19 मार्च 2025। अरबपति एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स के रॉकेट ने अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स की सुरक्षित घर वापसी कराई, लेकिन इस जश्न के बीच मस्क के लिए एक बुरी खबर भी सामने आई। सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, लास वेगास के एक सर्विस सेंटर में रात भर कई टेस्ला वाहनों में आग लगा दी गई और गोलीबारी की गई।

टेस्ला कोलिजन सेंटर पर हुए इस हमले में कम से कम पांच गाड़ियां क्षतिग्रस्त हो गई, जिनमें से दो पूरी तरह से आग की चपेट में आ गए। एफबीआई इस घटना की जांच कर रही है, जिसमें कहा गया है कि इस हमले में आतंकवाद के लक्षण दिख रहे हैं।

अधिकारियों के अनुसार, अपराधी ने मोलोटोव कॉकटेल का इस्तेमाल किया और वाहनों पर गोलियां चलाई। व्यवसाय के सामने के दरवाजों पर प्रतिरोध शब्द भी लिखा हुआ था। जांच जारी है, एफबीआई की ज्वाइंट टेररिज्म टास्क फोर्स और लास वेगास मेट्रोपॉलिटन पुलिस विभाग मिलकर अपराधी की पहचान करने की कोशिश कर रहे हैं।

लास वेगास मेट्रोपॉलिटन पुलिस विभाग के सहायक शेरिफ डोरी कोरेन ने मंगलवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा,यह टेस्ला कारखाने के खिलाफ एक लक्षित हमला था। अधिकारियों ने कई वाहनों में आग लगी हुई पाई, इसके साथ ही सामने के दरवाजों पर रेसिस्ट शब्द स्प्रे-पेंट किया हुआ पाया। घटना के वीडियो में वाहनों में आग की लपटें उठती दिखाई दे रही हैं, जबकि संदिग्ध व्यक्ति, जो पूरी तरह से काले कपड़े पहने हुए है, कारों के बीच से गुजरते हुए एक बैग में हाथ डालता हुआ दिखाई दे रहा है। किसी के घायल होने की खबर नहीं है। अग्निशमन विभाग ने वाहनों की बैटरियों तक पहुंचने से पहले ही आग बुझा दी। टेस्ला के सीईओ एलन मस्क ने हमले की निंदा करते हुए इसे आतंकवाद बताया है और कहा है कि हिंसा का स्तर पागलपन भरा और बेहद गलत है। एक अन्य पोस्ट में उन्होंने कहा,हिंसा का यह स्तर पागलपनपूर्ण और बेहद गलत है। टेस्ला सिर्फ इलेक्ट्रिक कारें बनाती है और उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया है,जिसके लिए उस पर ये हमले किए जाएं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने हमलों की निंदा की है और सुझाव दिया है कि इस हमले को घरेलू आतंकवाद के तौर पर रजिस्टर किया जाना चाहिए। अमेरिकी अटॉर्नी जनरल पामेला बॉन्डी ने भी टेस्ला की संपत्ति पर हाल ही में हुए हमलों की कड़ी निंदा की है और उन्हें घरेलू आतंकवाद से कम नहीं बताया है। उन्होंने कहा,हम इन हमलों में शामिल लोगों पर गंभीर परिणाम भुगतने वाली जांच जारी रखेंगे, जिनमें पर्दे के पीछे से इन अपराधों को करने और वित्तपोषित करने वाले लोग भी शामिल हैं।

डोनाल्ड ट्रंप को कोर्ट से बड़ा झटका

अब अमेरिकी सेना में शामिल होंगे ट्रांसजेंडर्स

वाशिंगटन,19 मार्च 2025। एक संघीय न्यायाधीश ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के उस कार्यकारी आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें ट्रांसजेंडरों को सैन्य सेवा से प्रतिबंधित किया गया था। वाशिंगटन डीसी में न्यायाधीश एना रेयेस ने अपने आदेश में कहा है कि ट्रंप का ट्रांसजेंडर सैनिकों को सैन्य सेवा से बाहर करने का आदेश संभवतः उनके संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन करता है। उन्होंने प्रशासन को अपील करने के लिए समय देते हुए अपने आदेश को तीन दिन के लिए टाल दिया। दरअसल,ट्रंप ने 27 जनवरी को एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए थे, जिसमें कहा गया है कि ट्रांसजेंडर सैन्यकर्मियों की यौन पहचान सैनिकों की सम्मानजनक, सत्यनिष्ठ और अनुशासित जीवनशैली के प्रति प्रतिबद्धता के साथ टकराव करती है।

आदेश को लेकर रक्षा सचिव पीट हेगसेथ ने एक नीति जारी की, जो संभावित रूप से लिंग डिस्फोरिया वाले लोगों को सैन्य सेवा से अयोग्य घोषित करती है। लिंग डिस्फोरिया वह संकट है जो एक व्यक्ति महसूस करता है क्योंकि उसका निर्धारित लिंग और लिंग पहचान मेल नहीं खाती है। इस चिकित्सा स्थिति को अवसाद और आत्महत्या के विचारों से जोड़ा गया है। वादी के वकीलों का तर्क है कि ट्रंप का आदेश पांचवें संशोधन के तहत ट्रांसजेंडर लोगों के समान संरक्षण के अधिकारों का उल्लंघन करता है। सरकारी वकीलों का तर्क है कि सैन्य अधिकारियों के पास न्यायिक हस्तक्षेप के बिना सेवा सदस्यों को नियुक्त करने और तैनात करने का निर्णय लेने का व्यापक विवेक है।

सेना में सेवा करते हैं हजारों ट्रांसजेंडर

हजारों ट्रांसजेंडर सेना में सेवा करते हैं, लेकिन वे सक्रिय-ड्यूटी सेवा सदस्यों की कुल संख्या का एक प्रतिशत से भी कम का प्रतिनिधित्व करते हैं।

दूसरी महिलाओं के साथ सोने से रोका तो पति ने पत्नि पर पेट्रोल डालकर लगा दी आग

कराची,19 मार्च 2025। पाकिस्तान में लगातार महिलाओं के खिलाफ हिंसा बढ़ती जा रही है, हाल ही में एक पति ने अपनी पत्नी पर पेट्रोल डालकर जला दिया। कराची में एक महिला को उसके पति ने कथित तौर पर आग के हवाले कर दिया। बताया जा रहा है कि पीड़िता ने पति के अन्य महिलाओं के साथ संबंध रखने पर आपत्ति जताई थी। दावा यह भी है कि पेट्रोल डालकर आग लगाने से पहले महिला को प्रताड़ित किया गया।

आरोप है कि महिला का पति अक्सर उसके साथ बुरा बर्ताव करता था। पति के ज़रिए लगाई गई आग से महिला 40 फीसद तक जल गई है,फिलहाल उसका कराची के सिविल अस्पताल में इलाज चल रहा है। आरोपी पति घटना को अंजाम देने के बाद मौके से फरार हो गया, हालांकि पुलिस उसे पकड़ने में कामयाब रही और पूछताछ कर रही है। स्थानीय मीडिया के मुताबिक हाल ही में पाकिस्तान में प्रगतिशील महिला संघ (पीडब्ल्यूए) की तरफ से जारी एक रिपोर्ट से पता चलता है कि हर साल लगभग 300 पाकिस्तानी महिलाओं को उनके पति या पति के परिवार के ज़रिए जलाकर मार दिया जाता है। इसके अलावा पाकिस्तान के मानवाधिकार आयोग (एचआरसीपी) ने मंगलवार को महिलाओं और लैंगिक अल्पसंख्यकों के लिए न्याय पर एक बैठक आयोजित की।

प्रमुख पाकिस्तानी दैनिक डॉन के मुताबिक मीटिंग में महिलाओं की सुरक्षा के लिए मौजूदा कानूनों पर चर्चा हुई। एचआरसीपी ने रेप, अगवा,घरेलू हिंसा और हानिकारक प्रथागत प्रथाओं के मामलों में कम सजा दरों पर चिंता व्यक्त की। आयोग ने कहा कि पाकिस्तान में महिलाओं के खिलाफ अपराधों की खबरें अक्सर मीडिया में आती रहती हैं, लेकिन इन अपराधों के लिए सजा की दर चिंताजनक रूप से कम है।

घर में घुसकर मारपीट,पार्षद के बेटे सहित 9 पर रिपोर्ट दर्ज

- संवाददाता -

अंबिकापुर, 19 मार्च 2025 (घटती-घटना)।

प्रकाश साहू व पार्षद किरण साहू के बेटे विशाल साहू ने अपने साथी अमन मिश्रा सहित 9 अन्य लोगों के साथ मिलकर एक व्यक्ति के घर में घुसकर मारपीट की घटना को अंजाम दिया है। मारपीट में एक महिला के सिर में गंभीर चोटें आई है। मारपीट का कारण रुपए लेन-देन का मामला बताया जा रहा है। पीड़ित ने मामले की रिपोर्ट मणिपुर थाना में दर्ज कराई है। पुलिस आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है।

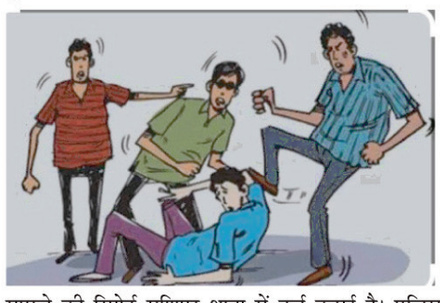

पुलिस के अनुसार शहर के दरीपारा निवासी नमोनारायण ने मणिपुर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है। वह पुलिस को बताया है कि बुधवार की दोपहर दरीपारा निवासी विशाल साहू पिता प्रकाश साहू अपने साथी अमन मिश्रा सहित कुल 9 लोग मेरे घर में घुसकर मेरे बेटे व बहू के साथ मारपीट किया है। मारपीट के दौरान घर के एक महिला सदस्य का सिर में गंभीर चोटें आई है। विशाल साहू की मां किरण साहू पार्षद भी हैं। मारपीट का कारण रुपए लेनदेन का मामला बताया जा रहा है। ममाले में मणिपुर पुलिस ने आरोपी विशाल साहू, अमन मिश्रा सहित 9 अन्य लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है।

पेंशनर्स महासंघ में माणिक चंद्र,सरगुजा जिले के जिला अध्यक्ष और डॉ एस पी वैश्य जिला संयोजक बनाए गए

» राज्य सरकार से एरियर सहित उत्त महंगाई राहत मांग की गई

- संवाददाता -

अंबिकापुर,19 मार्च 2025 (घटती-घटना)।

भारतीय राज्य पेंशनर्स महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बी के वर्मा के मुख्य आतिथ्य और छत्तीसगढ़ के प्रांताध्यक्ष वीरेन्द्र नामदेव की अध्यक्षता में पेंशनर संगठन के विस्तार और सरगुजा जिले में पेंशनरों समस्याओं के निदान को लेकर पंचायत प्रशिक्षण केंद्र बौरी पारा मायापुर अंबिकापुर में बुधवार 19 मार्च को पेंशनरों की बैठक संपन्न हुआ।

बैठक में पशुपालन विभाग से एमएम पो सेवानिवृत उपयुक्त माणिक चंद्र को भारतीय राज्य पेंशनर्स महासंघ छत्तीसगढ़ प्रदेश जिला का अध्यक्ष तथा सेवानिवृत मुख्यचिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ एस पी वैश्य को जिला संयोजक को दायित्व सौंपा गया। बैठक में राज्य सरकार से पेंशनरों और परिवार पेंशनरों के लिए केन्द्र

के समान केन्द्र के देय तिथि से 3त महंगाई राहत देने की मांग की गई।

बैठक मे महावीर राम,प्रदीप सोनी, सुरेश कुमार शर्मा, विजय कुमार सिन्हा, कृष्ण कुमार तिवारी, शेषनाथ कुशवाहा, अशोक कुमार सिंह, डॉ लक्ष्मण सिंह चौहान,गुरचरण सिंह,के के तिवारी, प्रकाश चंद्र मेहता, एस के अग्रवाल, नागेंद्र गिरी, श्रीमती सरिता सिंह, श्रीमती सी एम सिन्हा आदि ने विचार व्यक्त किए।

बैठक में प्रांताध्यक्ष वीरेन्द्र नामदेव ने पेंशनरों के महंगाई राहत रोके जाने पर सरकार के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार मध्य प्रदेश राज्य पुर्नगठन अधिनियम 2000 की धारा 49 के नाम पर अन्याय कर रही है। विधानसभा चुनाव के दौरान मोदी की गारंटी के तहत केंद्र के देय तिथि से डीए डीआर देने की घोषणा को विष्णु देव साय सरकार झूठा साबित करने का काम कर रही है। इसके अलावा पेंशनरों की सारांशीकरण राशि की कटौती की अवधि कम करने,65 वर्ष की आयु से अतिरिक्त पेंशन देने,दैनिक वेतनभोगी की संपूर्ण सेवाकाल को पेंशन गणना में शामिल करने, रेल यात्रा में छूट को पुनः बहाल करने,पेंशनरों को मृत्यु पर एग्रेसिया देने,आयकर से मुक्त करने, भारत भ्रमण की सुविधा देने, राज्य में बस यात्रा में छूट के आदेश का परिपालन करने,कैशलेश मेडिकल की सुविधा देने आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई।

भारतीय राज्य पेंशनर्स महासंघ छत्तीसगढ़ प्रदेश का संगठनात्मक दौरा कार्यक्रम की इस बैठक में प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र नामदेव के साथ प्रदेश महामंत्री अनिल गोल्हानी,प्रदेश कोषाध्यक्ष बी एस दसमेर, प्रदेश संगठन मंत्री टी पी सिंह, प्रदेश संयोजक सेवानिवृत दैनिक वेतन भोगी कार्यभारित कर्मचारी प्रकोष्ठ अनिल पाठक आदि शामिल रहे।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन प्रांतीय सचिव प्रदीप सोनी ने किया।

मुख्यमंत्री भूमिहीन आवास हितग्राहियों के ऊपर आखिर किसने की नजर टेढ़ी ?

» क्या जनपद अधिकारी चयनित मुख्यमंत्री आवास हितग्राहियों पैर रखते हैं टेढ़ी नजर ?

» क्या शासन के निर्देशों पर भूमिहीन मुख्यमंत्री आवास हितग्राहियों के निर्माण के लिए दूसरी तीसरी किस्त न देकर हितग्राहियों से किया जा रहा है कुठाराघात ?

» शासन क्यों कर रही है मुख्यमंत्री भूमिहीन आवास योजना में भेदभाव ?

- सुदामा राजवाड़े -

राजपुर, 19 मार्च 2025 (घटती-घटना)।

विदित हो की पूर्व की कांग्रेस सरकार के द्वारा प्रदेश में आर्थिक जनगणना कराकर ऐसे 18 लाख पात्र आवासहीन हितग्राहियों को चयनित कर चिन्हांकित कर प्रदेश की तत्कालीन कांग्रेस सरकार के द्वारा 2023 विधानसभा चुनाव से पूर्व मुख्यमंत्री आवास निर्माण के नाम पर चयनित 18 लाख हितग्राहियों के नाम पर 25-25 हजार रुपए उनके बैंक अकाउंट में डालने के दावे किए गए थे । उसे दौरान मुख्यमंत्री आवास काफी सुर्खियों में था।

लेकिन आज सत्ता परिवर्तन होने पश्चात विष्णु देव साय सरकार में मुख्यमंत्री भूमिहीन आवास योजना बलरामपुर जिले के जनपद पंचायत क्षेत्र राजपुर की ग्राम पंचायत में भ्रमण के दौरान देखने को नही मिल रहा है। कहीं हितग्राही दूसरी किस्त का इंतजार कर रहे हैं कहीं तीसरी किस्त का...वहीं दूसरी ओर देखा जा रहा है की प्रधानमंत्री आवास योजना में जिओ टेक होने के पश्चात प्रधानमंत्री आवास हितग्राहियों के खाते महज दो-तीन दिनों में किस्त के रूपये डाले जा रहे हैं। इस विषय को लेकर मुख्यमंत्री आवास हितग्राही ने नाम न छापने की शर्त पर बताया गया कि विगत डेढ़ महीना पूर्व से प्लींथ लेवल तक का निर्माण कराया जा चुका है बावजूद उसके दूसरी किस्त की राशि पता नहीं क्यों नहीं दी जा रही है। उनके द्वारा आगे बताया गया कि जब भी राजापुर जनपद कार्यालय में आवास आवास प्रभारी गुप्ता बाबु के पास जाते हैं तो उनके द्वारा हर बार यही कहा जाता है कि शासन के ऊपर निर्भर करता है वह जब भेजेंगे तो आपको मिल जाएगा।जबकि बताया जाता है कि अभी तो शासन का एक ही निर्देश है कि मुख्यमंत्री आवास को ही जल्द से जल्द पूरा करें। आवास प्रभारी के द्वारा यह

आश्वासन भी दिया जाता है कि जिओ टेक होने पर साथ एक महीना 15 दिन में खाते में संभवतः पैसा आप लोगों के खाते में आ सकता है यदि नहीं आता है तो ऊपर से शासन की ओर से होल्ड किया गया है जब उक्त हितग्राही से पूछा गया कि क्या आप इस बात को लेकर जनपद अधिकारी से कभी बात की तो उनके द्वारा बताया गया कि जनपद अधिकारी द्वारा कहा गया कि शासन के माध्यम से आप लोग के खाते में डायरेक्ट पैसा जाएगा इसमें मैं क्या कह सकता हूं। हितग्राही की बातों से जाहिर होता है की आवास प्रभारी जिओ टेक हो जाने पश्चात समय पर ऑनलाइन ना देते हैं या फिर जनपद अधिकारी के निर्देशों पर भेजा जाता है या फिर शासन जानबूझकर दूसरी तीसरी किस्त की रकम लटकाए रखने की मंशा रखी जाती है।

बहरहाल जो भी हो जिस तरह से प्रधानमंत्री आवास के रुपए हितग्राहियों के खाते में दो-तीन दिन के अंदर डाले जा रहे हैं और दूसरी और भूमिहीन मुख्यमंत्री आवास के लिए जिओ टेक हो जाने के दो माह बीत जाने के बावजूद कहीं पहली किस्त कही दूसरी कहीं तीसरी किस्त के लिए भूमिहीन मुख्यमंत्री आवास हितग्राहियों को कार्यालय का चक्कर लगात आसानी से देखे जा सकते है । निःसंदेह उनके साथ दोहरा मापदंड अपनाया जा रहा है। जिसके लिए जांच कर दोषीयों पर कार्यवाही की मांग की जा रही है।

CMYK

AMBIKAPUR GG PAPER 20 MARCH 2025_Layout 2 3/20/2025 1:58 AM Page 5

कलेक्टर ने लम्बित प्रकरणों के शीघ्र निराकरण का दिया निर्देश

-संवाददाता-
कोरबा,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

कलेक्टर अजीत वसंत ने समय सीमा की बैठक लेकर विभागीय कामकाजों की समीक्षा की। उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि मुख्यमंत्री जनदर्शन,प्रधानमंत्री पोर्टल और राज्यपाल सहित अन्य मंत्रियों से प्रेषित प्रकरणों का समय सीमा के भीतर जाँच कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करें। कलेक्टर ने विभिन्न विभागों में लंबित विभागीय जाँच के प्रकरणों में शीघ्र जाँच प्रतिवेदन प्रस्तुत कर संबंधित के विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही के निर्देश दिए। उन्होंने एसडीएम को पटवारियों के जाँच प्रतिवेदन तथा जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया कि लंबे समय से अनुपस्थित शिक्षकों पर की जा रही कार्यवाही के संबंध में जाँच प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित समय सीमा की बैठक में कलेक्टर श्री वसंत ने विभागवार लम्बित टीएल के प्रकरणों की समीक्षा की और पुराने लम्बित प्रकरणों पर जाँच कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देशित किया कि कलेक्टर जनदर्शन के लंबित प्रकरणों पर भी शीघ्र कार्यवाही सुनिश्चित करें। बैठक में

कलेक्टर ने अटल मॉनिटरिंग डैशबोर्ड अंतर्गत आयुष्मान, कृषि विभाग, पीएम आवास,महतारी वंदन योजना सहित महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन में प्रगति लाते हुए संपूर्ण जानकारी डैशबोर्ड के अनुसार ऑनलाइन फॉर्मेट में अपडेट रखे। उन्होंने आयुष्मान कार्ड बनाने के कार्य में प्रगति लाने और मृत व्यक्तियों के नाम को लिस्ट से डिलीट करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने व्यवन्दन योजना की समीक्षा कर्तव्य हुए ग्रामीण क्षेत्रों में इस योजना से वंचित पात्र हितग्राहियों को जोड़ने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर श्री वसंत ने अनुभागवार स्कूली विद्यार्थियों के जाति प्रमाणपत्र बनाने के कार्य की समीक्षा करते हुए एसडीएम को छूटे हुए विद्यार्थियों के प्रमाणपत्र बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी एसडीएम और तहसीलदारों को नक्शा सुधार के प्रतिवेदन समय पर प्रेषित करने निर्देशित किया। कलेक्टर ने विद्युत विभाग को निर्देशित किया कि जिले के दूरस्थ और विद्युतविहीन वाले छोटे बसाहटों, पारा,मुहल्लों में बिजली पहुंचाने की दिशा में प्राथमिकता से कार्य करते हुए प्रस्ताव तैयार करें। उन्होंने सभी विभागों को जनहित से जुड़े कार्य और मानवसंसाधन की आवश्यकताओं को ध्यान रखकर दो दिन के भीतर डीएमएफ अंतर्गत प्रस्ताव प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने कॉलेज में निर्माणाधीन गर्ल्स हॉस्टल के कार्य को शीघ्र पूर्ण करने और नए सत्र से हैंडओवर करने के निर्देश दिए। उन्होंने सखी वन स्टॉप सेंटर,दिव्यांग प्रमाण पत्र प्रदान करने लगाए गए शिविर और प्रमाणपत्र वितरण की समीक्षा की। कलेक्टर ने स्वामित्व योजना अंतर्गत अधिकार अभिलेख को अद्यतन करने, एसडीएम और तहसीलदारों को अपने क्षेत्र में सड़क,पेयजल,पहुँचमार्ग सहित अन्य बुनियादी आवश्यकताओं को ध्यान में लाने और संबंधित विभाग से समन्वय कर डीएमएफ अंतर्गत प्रस्ताव भेजने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री वसंत ने अंत्यावसायी विभाग अंतर्गत स्वरोजगार के लिए ऋण लेकर समय पर राशि जमा नहीं करने वाले हितग्राहियों से राशि वसूली करने के निर्देश तहसीलदारों को दिए। उन्होंने बैठक में ईआफ़िस संचालन के संबंध में निर्देश देते हुए सभी अधिकारियों को एक अप्रैल से ईआफ़िस के अंतर्गत कार्य करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने टीएल अंतर्गत सभी प्रकरणों को आगामी 15 दिवस के भीतर क्लीयर करने के निर्देश दिए हैं। बैठक में डीएफओ कटघोरा निशांत कुमार, निगमायुक्त आशुतोष पांडेय, जिला पंचायत सीईओ दिनेश कुमार नाग,अपर कलेक्टर अनुपम तिवारी, मनोज बंजारे सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

कलेक्टर ने पोड़ी उपरोड़ा के सरभोंका जलाशय में किया केंज कल्चर का निरीक्षण

कलेक्टर अजीत वसंत ने आज पोड़ी उपरोड़ा विकासखंड के अंतर्गत ग्राम सरभोंका के निमऊ कछार में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना और जिला खनिज संस्थान न्यास के सहयोग से स्थानीय मछुवारों द्वारा केज के माध्यम से किए जा रहे मत्स्य पालन का निरीक्षण किया। उन्होंने यहां बांगो सहित आस-पास के पंजीकृत मछुवारा समिति के सदस्यों से चर्चा कर उनके द्वारा मत्स्य पालन से हो रही आमदनी और जीवन स्तर में बदलाव को भी जाना। स्थानीय ग्रामीणों ने कलेक्टर को बताया कि केज कल्चर के माध्यम से उन्हें हर साल 80 से 90 हजार की आमदनी तो होती ही है, इसके साथ ही साफ-सफाई, मछली के परिवहन और बिक्री में भी आमदनी होती है। यहां 800 नग में केज लगाया गया है, जिसमें 9 पंजीकृत मछुवारा समिति है और लगभग 160 सदस्यों को 5-5 केज उपलब्ध कराया गया है। उन्हें प्रशिक्षित और अनुभवी व्यक्ति द्वारा केज के माध्यम से मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए समय-समय पर मार्गदर्शन भी मिलता रहता है। इसके साथ ही यहां से उत्पादन की जाने वाली मछली को बाहर निर्यात किया जाता है। जिससे उनकी आमदनी होती है और इससे जीवनस्तर में भी बदलाव आ रहा है। कलेक्टर श्री वसंत ने मौके पर मत्स्य अधिकारियों से चर्चा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने जिले में केज कल्चर को बढ़ावा देने तथा इसके माध्यम से स्थानीय ग्रामीणों-मछुवारों को रोजगार का अवसर प्राप्त होने से आर्थिक लाभ मिलने और केज के विस्तार के लिए जिला प्रशासन द्वारा हर प्रकार सहयोग की बात कही। उन्होंने लैण्डिंग सेंटर,प्रोसेसिंग यूनिट,एक्वा पार्क विस्तार तथा एक्वा टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए सहयोग करने की बात कही। उन्होंने ग्रामीणों से स्थानीय समस्याओं और शासन की योजनाओं के क्रियान्वयन के संबंध में भी जानकारी ली। इस अवसर पर पोड़ीउपरोड़ा ब्लॉक के एसडीम तुलाराम भारद्वाज और मत्स्य विभाग के अधिकारी क्रांतिकुमार बघेल भी उपस्थित थे।

रेड क्रॉस सोसाइटी के चेयरमैन बाबूलाल अग्रवाल ने कहा मरीजों को मिले बेहतर इलाज...जिला अस्पताल बने आदर्श

-संवाददाता-
सूरजपुर,19 मार्च 2025 (घटती-घटना)।

रेड क्रॉस सोसाइटी के नवनिर्वाचित चेयरमैन बाबूलाल अग्रवाल ने जिला चिकित्सालय की स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाने पर जोर दिया है। उन्होंने चर्चा के दौरान कहा कि अस्पताल में आने वाले प्रत्येक मरीज को सभी आवश्यक सुविधाएं सहज रूप से मिलनी चाहिए,ताकि किसी को असुविधा न हो। चिकित्सकों और अस्पताल प्रशासन से मरीजों के प्रति संवेदनशील रहने की अपील की।

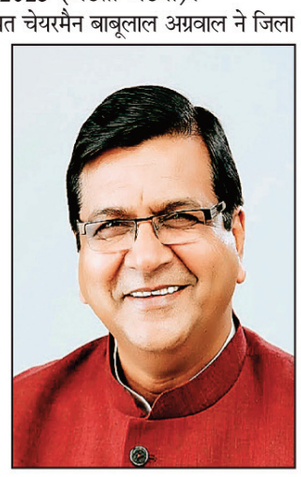

श्री अग्रवाल ने अस्पताल के चिकित्सकों और स्टाफ से आग्रह किया कि वे मरीजों की सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता दें और हर मरीज को बेहतर उपचार देने के लिए पूरी निष्ठा से कार्य करें। अस्पताल में आने वाले हर व्यक्ति को यह महसूस होना चाहिए कि उसकी देखभाल पूरी गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ की जा रही है। दूर-दराज से आने वाले मरीजों के प्रति अधिक संवेदनशीलता बरती जाए, ताकि वे इलाज के अभाव में दर-दर भटकने को मजबूर न हों। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि यह शिकायत बिल्कुल नहीं आनी चाहिए कि किसी मरीज को उचित उपचार न मिलने के कारण प्राइवेट अस्पताल जाने की सलाह दी गई हो। श्री अग्रवाल ने यह भी स्पष्ट किया कि रेड क्रॉस सोसाइटी गरीब, असहाय और जरूरतमंद मरीजों की सहायता के लिए सदैव तैयार रहेगी। संस्था का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आर्थिक तंगी या संसाधनों की कमी के कारण कोई भी व्यक्ति उपचार से वंचित न रहे। रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा जरूरतमंदों को दवाइयां, चिकित्सा उपकरण, और आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान करने की दिशा में निरंतर प्रयास किए जाएंगे। इसके अलावा, स्वास्थ्य जागरूकता अभियान,ब्लड डोनेशन कैंप और अन्य कल्याणकारी गतिविधियों को भी और अधिक सक्रिय रूप से संचालित किया जाएगा। चेयरमैन बाबूलाल अग्रवाल ने कहा कि जिला चिकित्सालय की सेवाओं को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए राज्य सरकार से भी आवश्यक समन्वय किया जाएगा। उन्होंने बताया कि सरकार से सहयोग लेकर अस्पताल में आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं विकसित करने और संसाधनों को बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा। उनका लक्ष्य है कि सूरजपुर का जिला चिकित्सालय प्रदेश के बेहतरीन अस्पतालों में गिना जाए और यहां की स्वास्थ्य सेवाएं अन्य जिलों के लिए एक मिसाल बनें। उन्होंने आम नागरिकों से भी अपील की कि यदि किसी को चिकित्सालय से संबंधित कोई समस्या हो,तो वे बेझिझक रेड क्रॉस सोसाइटी से संपर्क कर सकते हैं, हर संभव प्रयास किया जाएगा कि मरीजों को बेहतरीन स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं और किसी को भी परेशानी का सामना न करना ना पड़े।

डीएलसीसी व डीएलआरसी की तिमाही समीक्षा बैठक संपन्न

-संवाददाता-
सूरजपुर,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

कलेक्टर श्री एस जयवर्धन की अध्यक्षता एवं जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदिनी साहू की उपस्थिति में आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में डीएलसीसी/जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति व डीएलआरसी/ जिला स्तरीय पुनरीक्षण समिति की अक्टूबर एवं दिसंबर 2024 तिमाही समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में जमा अग्रिम एवं ऋण जमा अनुपात पर चर्चा की गई। इस दौरान समस्त शासकीय योजनाओं की लक्ष्य प्राप्ति, वार्षिक साख योजना की प्रगति, मुद्रा लोन, पेंशन योजना,पीएम स्वनिधि, किसान क्रेडिट कार्ड के प्रकरण के प्रस्तुति और स्वीकृति, अस्वीकृति एवं वर्तमान स्थिति,किसान क्रेडिट कार्ड, आधार सीडिंग, वर्ष 2024-25 हेतु एनआरएलएम द्वारा आबंटित लक्ष्य एवं प्रगति,अंत्योदय स्वरोजगार योजना , स्टैंडअप योजना,सामाजिक सुरक्षा योजना जैसे पीएमएसबीवाई, पीएम जेजे बी वाई,ए पी वाई,प्रधान मंत्री जनधन योजना ,पीएम एफ एम ई योजना की प्रगति की जानकारी ली गई। कलेक्टर श्री जयवर्धन ने उपस्थित सभी बैंकर्स को कृषि एवं इससे जुड़े क्षेत्रों के प्रकरणों का जल्द से जल्द निराकरण करने को कहा। साथ ही उन्होंने लोगों के हित को देखते हुए शासकीय योजनाओं से संबंधित सभी ऋण प्रकरणों को प्राथमिकता देते हुए स्वीकृत करने को कहा। इसके अलावा इस दौरान कलेक्टर श्री जयवर्धन ने प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत विकासखंड रामानुजनगर के बरहोल निवासी महेंद्र राम एवं पंडरी निवासी आरकेसी मनी को उनके परिजनों के मृत्यु पर 02-02 लाख रुपए का चेक प्रदान किया। इस अवसर पर एलडीएम श्री आनंद मिंज,नाबार्ड और आर बी आई के प्रतिनिधि, विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

एग्रीस्टेक पोर्टल में कृषक पंजीयन के लिए सभी विकासखण्ड में लगाये जा रहे है शिविर

-संवाददाता-
सूरजपुर,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

कलेक्टर एस जयवर्धन के निर्देश पर एग्रीस्टेक पोर्टल में कृषक पंजीयन कार्य के लिए जिले के सभी विकास खंडों में 05 दिवसीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसके लिए 19 मार्च से 23 मार्च तक लगने वाले शिविर में 36 स्थानों का चिन्हांकन शिविर हेतु किया गया है। जिसमें लगभग 101 गांवों को कवर किया जाएगा। ज्यादा से ज्यादा से किसानों का पंजीयन किया जा सके इसके लिए 24 नोडल अधिकारी बनाये गए है और शिविर अधिकारी भी नियुक्त किये गए है। इस विषय पर जानकारी देते हुए कलेक्टर द्वारा बताया गया कि कृषक पंजीयन प्रणाली पारदर्शिता को बढ़ावा देने के साथ-साथ कृषि अनुदान,बीमा और अन्य सहायता योजनाओं की सुचारू व्यवस्था सुनिश्चित करेगी। यह प्रणाली किसानों के लिए एक डिजिटल डेटाबेस तैयार करेगी, जिससे उनके कृषि अभिलेखों का डिजिटलीकरण होगा और बार-बार केवाईसी कराने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। गौरतलब है कि इस परियोजना का उद्देश्य पूरे देश में कृषि भू-स्वामियों का एक व्यापक और एकीकृत पंजीकरण तैयार करना है, जिससे सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे पात्र किसानों तक पहुंच सके। कृषक पंजीयन हेतु वांछित दस्तावेजः- बी1 (भू-अधिकार पत्र), खसरा, ऋण पुस्तिका, आधार कार्ड, मोबाइल नंबर के साथ स्वयं, स्थानीय युवा, सीएसस्री (कॉमन सर्विस सेंटर) पर करा सकते हैं।

राज्य के बाहर अध्ययनरत एससी /एसटी,ओबीसी वर्ग के अभ्यर्थी 26 मार्च तक कर सकते हैं आवेदन

-संवाददाता-
सूरजपुर,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ के बाहर अन्य राज्य के शासकीय, अशासकीय महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, नर्सिंग कॉलेज, पॉलिटेक्निक, आईटीआई एवं डाईट आदि में अध्ययनरत् छत्तीसगढ़ राज्य के निवासी विद्यार्थियों हेतु शैक्षणिक सत्र 2024-25 अंतर्गत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों हेतु ऑनलाइन पोस्ट मैट्रिक (कक्षा 12वीं से उच्चतर) छात्रवृत्ति हेतु विद्यार्थियों के नवीन एवं नवीनीकरण पंजीयन, संस्थाओं के प्रस्ताव/स्वीकृति लॉक करने के लिए तिथि में वृद्धि की गई है। पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति की पात्रता रखने वाले विद्यार्थी 01 फरवरी 2025 से अपना पंजीयन, स्वीकृति एवं वितरण कार्यवाही वेबसाइट epostmatric scholarsip.cg.nic.करा सकते हैं। सहायक आयुक्त आदिवासी विकास कोरबा से प्राप्त जानकारी के अनुसार राज्य के बाहर अध्ययनरत विद्यार्थियों से 19 मार्च से 26 मार्च तक नवीन तथा नवीनीकरण के ऑनलाइन आवेदन स्वीकार किए जाएंगे, 19 मार्च से 28 मार्च तक ड्राफ्ट प्रपोजल लॉक किया जाएगा, साथ ही 30 मार्च 2025 तक सैंक्शन ऑर्डर लॉक करने की तिथि निर्धारित की गई है। निर्धारित तिथियों के पश्चात् शिक्षा सत्र 2024-25 की पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति हेतु आवेदन स्वीकृत नहीं किए जाएंगे। साथ ही ड्राफ्ट प्रपोजल लॉक एवं सेक्शन ऑर्डर लॉक करने का अवसर भी प्रदान नहीं किया जाएगा। उक्त तिथि तक कार्यवाही पूर्ण नहीं करने पर यदि संबंधित संस्थाओं के विद्यार्थी छात्रवृत्ति से वंचित रह जाते हैं तो इसके लिए संस्था प्रमुख स्वतः जिम्मेदार होंगे।

आबकारी विभाग द्वारा 13.5 कच्ची महुआ मदिरा एवं 75 किग्रा.महुआ लाहन जब्त

-संवाददाता-
सूरजपुर,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

आबकारी आयुक्त श्रीमती आर संगीता एवं कलेक्टर श्री एस जयवर्धन के निर्देशन व संभागीय उपायुक्त आबकारी श्री विजय सेन शर्मा एवं जिला आबकारी अधिकारी इन्द्रबली सिंह मार्कण्डेय के मार्गदर्शन में आबकारी वृत प्रतापपुर एवं वृत सूरजपुर अंतर्गत 2 गैर जमानती प्रकरण दर्ज किया गया है। ग्राम हर्रा पारा थाना झिलमिली से 6.5 लीटर हाथ भट्ठी निर्मित कच्ची महुआ मदिरा एवं परी थाना सूरजपुर से 7 लीटर हाथ भट्ठी निर्मित कच्ची महुआ मदिरा एवम 75 किग्रा. महुआ लहान बरामद कर जप्त कर आरोपी के विरुद्ध छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम की धारा के तहत प्रकरण दर्ज कर दोनों आरोपियो को न्यायिक रिमांड पर जेल दाखिला किया गया। कार्यवाही में वृत प्रतापपुर/सुरजपुर प्रभारी आबकारी उप निरीक्षक प्रदीप वर्मा, आबकारी मुख्य आरक्षक पारस नाथ राजवाड़े, आबकारी आरक्षक कमलेश्वर राजवाड़े, महिला सैनिक देवेंद्र कुमारी, नगर सैनिक राकेश कुशवाहा, वाहन चालक प्रमोद साहू उपस्थित थे।

न्यायालय तहसीलदार बैकुण्ठपुर जिला कोरिया,छत्तीसगढ

ई-कोड क्र0 ...../अ-6/2024-25

ईश्तहार

सर्वसाधारण ग्राम बैकुण्ठपुर/भण्डारपारा राजस्व निरीक्षक बैकुण्ठपुर/मनसुख तहसील बैकुण्ठपुर जिला कोरिया छ0ग0 तथा हितबद्ध पक्षकारों को सूचित किया जाता है, आवेदक राजदीप सिंहदेव आ0 स्व0 श्री अम्बरीश सिंहदेव उर्फ लाल ईश्वर शरण सिंहदेव व अन्य 01 दोनों निवासी क्र0 09 सोनू नगर नया गांव पाली (राजस्थान) ने आवेदन पत्र अंतर्गत धारा 109,110 भू0 राजस्व संहिता के तहत इस न्यायालय में आवेदन पेश किया है कि आवेदकगण स्व0 महाराजा शिवमंगल सिंहदेव के विधिक उत्तराधिकारी हैं। श्री रामानुज प्रताप सिंहदेव का निधन 06/08/1954 को हो गया उनके निधन के उपरांत परिशिष्ट अ की भूमियॉ ग्राम बैकुण्ठपुर स्थित भूमि खसरा नं0 21/2घ, 47/2,47/1, 76/1 79/1क, 203/1, 253/1, 258, 259, 261, 276, 277,281, 282/1, कुल योग 14 कुल रकबा 7.5880 हे0 व ग्राम बैकुण्ठपुर स्थित भूमि खसरा नं0 153/1,153/3/क, 269/7 कुल 4 कुल रकबा 11.1680 हे0 तथा ग्राम भण्डारपारा स्थित भूमि खसरा नं0 572, 578, 607 कुल 3 कुल रकबा 2.4500 हे0 भूमि को स्व0 महाराजा रामानुज प्रताप सिंहदेव के वारिसानों श्री पूपेन्द्र नारायण सिंहदेव श्री नृपेन्द्र नारायण सिंहदेव श्री महेन्द्र प्रताप सिंहदेव एवं श्री रामचन्द्र सिंहदेव के साथ उनके भाई श्री लाल रामशरण सिंदेव एवं श्री लाल हरिशरण सिंहदेव द्वारा संयुक्त रूप से उत्ताधिकार में अर्जित किया गया। आवेदकगण स्व0 श्री लाल हरिशरण सिंहदेव के विधिक वारिसान होने के कारण परिशिष्ट अ की भूमियों के राजस्व पत्रों में सहखातेदार के रूप में अपना नाम दर्ज कराये जाने का निवेदन किया गया है।

उक्त संबंध में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो वे दिनांक 17/04/2025 तक स्वयं या अपने प्रतिनिधि अथवा अभिभावक के द्वारा इस न्यायालय में आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत दिनांक के पश्चात प्राप्त आपत्ति पर कोईविचार विमर्श नहीं किया जावेगा।

जारी दिनांक 17/03/2025

सील — तहसीलदार, बैकुण्ठपुर,कोरिया,छ0ग0

न्यायाल अपर कलेक्टर एवं विशेष विवाह अधिकारी बलरामपुर

जिला बलरामपुर-रामानुजगंज,छत्तीसगढ़

क्रमांक/84/वि0विवाह अधि0/वाचक/2024 बलरामपुर,दिनांक -06/03/2025

फार्म-अ

सार्वजनिक सूचना

(नियम 8 देखिए)

सर्वसाधारण की जानकारी के लिए अधिसूचित किया जाता है कि वर पक्ष सुशील कुमार मेहरा आत्मज सरजू मेहरा उम्र 29 वर्ष जाति हरिजन निवासी वार्ड क्रमांक-02 रामानुजगंज, थाना व तहसील रामानुजगंज जिला बलरामपुर-रामानुजगंज (छत्तीसगढ़) एवं वधु पक्ष शीतल मिंज आत्मज शम्भू मिंज उम्र 21 वर्ष जाति उरांव निवासी ग्राम आरागाही थाना व तहसील रामानुजगंज जिला बलरामपुर-रामानुजगंज,छ0ग0 के द्वारा विशेष विवाह अधिनियम 1954 के अन्तर्गत अपने विवाह के अनुष्ठापित किये जाने हेतु आशयित विवाह की सूचना उक्त अधिनियम के द्वितीय अनुसूचि में प्रस्तुत किया है। जो संलग्न है। इस अनुष्ठापित होने वाले विशेष विवाह के संबंध में जिस किसी व्यक्ति को कोई दावा आपत्ति हो तो इस उद्घोषणा के प्रकाशन से 30 दिवस के अन्दर अर्थात दिनांक 06/04/2025 तक मेरे न्यायालय में स्वतः उपस्थित होकर या अपने अधिवक्ता के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते है। इसके पश्चात प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 06/03/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पदमुद्रा सहित जारी।

सुनवाई दिनांक - 06/04/2025

सील — अपर कलेक्टर एवं विशेष विवाह अधिकारी, जिला-बलरामपुर-रामानुजगंज

कार्यालय जिला सेनानी नगर सेना सूरजपुर

Nagarsenani2013@gmail.com

निलामी सूचना

क्र0/ /भंडार/2025 सूरजपुर, दिनांक - / /2025

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि इस विभाग के अंतर्गत सूरजपुर जिले के निष्प्रयोज्य घोषित भंडार सामग्रियों की नीलामी दिनांक 07/04/2025 दिन सोमवार को समय 01:00 बजे नगर सेना कार्यालय सूरजपुर में की जावेगी। निष्प्रयोज्य घोषित सामग्रियों में होमगार्ड जवानों की वर्दी सामग्री जैसे बुट एंकल जोड़, हंटर शू जोड़, डर्बी शू जोड़ काला, शर्ट खाखी कॉटन, शर्ट टेरीकॉट, पेंट टेरीकॉट,कै प बैरट, जुराब जोड़ कंबल, दरी, मच्छरदानी, पीटी शू, जुराब नायलोन, ग्राउण्डशीट, जर्सी खाखी, अंगोला, अंगोला शर्ट,बेल्ट लेदर काला, कूलर इत्यादि संपूर्ण सामग्री एक ही लाट में नीलामी की जावेगी इच्छुक खरीददार नीलामी तिथि एक दिन पूर्व कार्यालयीन समय में आकर नीलामी की जाने वाली सामग्री को देख सकेंगे।

1. प्रत्येक खरीददार को बोली लगाने के पूर्व राशि रू0 100 (एक सौ मात्र) प्रतिभूति के रूप में जमा करना अनिवार्य होगा। जिस खरीददार की बोली स्वीकार नहीं होगी उन खरीददार की जमा राशि वापस कर दी जावेगी।
2. खरीददार के उच्चतम बोली पर्यवेक्षक अधिकारी द्वारा स्वीकार किए जाने पर सम्पूर्ण राशि जमा कर उसी दिन ही सम्पूर्ण सामग्रियों को उठाना होगा।
3. बोली लाट में जहां है जितना है के आधार पर स्वीकार होगी।
4. नीलामी बोली की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति के सम्पूण अधिकार नीलामी कमेटी की होगी।

जी नंबर-242506009/1 — नगर सेनानी, नगर सेना सूरजपुर, छ0ग0

कार्यालय विशेष विवाह अधिकारी अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा,छ0ग0

वि0प्र0क्र0 /विशेष विवाह/2024-25

फार्म-'अ'

सार्वजनिक सूचना

सर्व साधारण की जानकारी के लिये यह सार्वजनिक सूचना जारी किया जाता है कि आवेदक देवलाल कुमार आ0 भीम कुमार उम्र 41 वर्ष, पेशा नौकरी निवासी ग्राम भिट्ठीकला खालपारा, सांडबार थाना मणिपुर तहसील अम्बिकापुर जिला सरगुजा छ0ग0 एवं आवेदिका निशा प्रभाकर आ0 विजय प्रताप, उम्र 36 वर्ष ग्राम देवगढ़ माझापारा, थाना-तहसील सीतापुर जिला सरगुजा, छ0ग0 के द्वारा विशेष विवाह अधिनियम 1954 के तहत आयशित विवाह की सूचना संबंधी आवेदन प्रस्तुत किया है।

प्रस्तावित अभिप्रेत विवाह पंजीयन की सूचना के विरूद्ध आपत्ति करने के इच्छुक कोई व्यक्ति इस न्यायालय में दिनांक 22/04/2025 को दिन के 11:00 बजे तक अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। उक्त अवधि समाप्त होने के पश्चात प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

सील — विशेष विवाह अधिकारी, सरगुजा,अम्बिकापुर

न्यायालय नजूल अधिकारी अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा,

रा0प्र0क्र0./ / अ-20(3)/2024-25

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक फखरूद्दीन खान आ0 स्व0 अब्दुल रशीद खान निवासी जरहागढ़ नगर अम्बिकापुर तहसील अम्बिकापुर जिला-सरगुजा, छ0ग0 के द्वारा अपने स्वत्व एव आधिपत्य की मोहल्ला महामाया रोड नगर अम्बिकापुर सीट नम्बर-08 स्थित भूखण्ड क्रमांक 2361/10, 2361/11, 2361/12 रकबा क्रमशः 736.56, 756, 1447.2 वर्गफीट भूमि को पुत्र के व्यवसाय हेतु रूपयों की आवश्यकता होने के कारण पंजाब नेशनल बैंक में बंधक रखने की अनापत्ति हेतु आवेदन पत्र मय शपथ पत्र, मेंटनेन्स खसरा की छायाप्रति के साथ पेश किया गया है।

अतः उक्त भू-खण्ड के संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो वे अपना लिखित दावा-आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक 28/03/2025 तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथि समय सीमा के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 05/03/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालीन पदमुद्रा से जारी।

सील — नजूल अधिकारी, अंबिकापुर

C M Y K

संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन
घटती घटना
सूरजपुर-कोरबा-सरगुजा-समाचार
अम्बिकापुर,गुरूवार 20 मार्च 2025

क्या जिम्मेदार अधिकारियों के नाक के नीचे राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन में करोड़ों का हुआ इंसेंटिव घोटाला?

कोरिया जिले के स्वास्थ्य कर्मियों को नहीं मिला इंसेंटिव फिर कहां गया इंसेंटिव का पैसा?

आरटीआई से हुआ बड़ा खुलासा...सरकार ने तो समय पर दिया स्वास्थ्य कर्मियों को पैसा फिर भी क्यों नहीं मिला इंसेंटिव आखिर कहां खर्च हुआ पैसा?

-रवि सिंह-
कोरिया,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

क्या राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन कोरिया जिले के लिए बना भ्रष्टाचार का केंद्र? राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन से आने वाले पैसे को आखिर किसने दिया घोटाले का रूप राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की स्थापना बड़े पैमाने पर लोगों को स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराने के लिए हुई थी, पर कुछ भ्रष्ट अधिकारियों की वजह से कई जिलों में यह विभाग अधिकारियों के लिए कमाई का जरिया बन गया, जो भ्रष्टाचार व घोटाले के लिए प्रसिद्ध पा रहा है जो जानकारी अभी आई है वह चौंकाने वाली है जहां जिले में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत वितरित किए जाने वाले इंसेंटिव और अन्य प्रोत्साहन राशि में बड़े घोटाले का मामला सामने आया है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में जिले के कई स्वास्थ्य कर्मियों को उनकी प्रोत्साहन राशि नहीं मिली, जबकि स्वास्थ्य विभाग द्वारा राज्य सरकार से समय-समय पर करोड़ों रुपये की मांग की गई थी। बचरा पोड़ी और सोनहत के स्वास्थ्य कर्मियों को पूरे वित्तीय वर्ष का इंसेंटिव नहीं मिला,जबकि कोरिया जिले से अलग हुए मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में लंबित भुगतान जारी कर दिए गए। बार-बार शिकायत के बावजूद न तो कोई कार्रवाई हुई और न ही बकाया राशि जारी की गई। फिर सवाल यह उठता है कि आखिर आया हुआ पैसा गया का आखिर किसने प्रोत्साहन राशि के पैसे को डकार लिया?

आरटीआई से हुआ बड़ा खुलासाःकरोड़ों की राशि गायब

सूचना के अधिकार के तहत मिली जानकारी से स्पष्ट हुआ कि तत्कालीन मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कोरिया द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन से करोड़ों रुपये की मांग की गई थी, जिसे राज्य सरकार ने मंजूरी भी दी। लेकिन स्वास्थ्य कर्मियों तक यह राशि पहुंची ही नहीं।

शिकायतों के बाद भी नहीं हुई कार्रवाई

बचरा पोड़ी और सोनहत सहित अन्य स्वास्थ्य कर्मियों ने कई बार अपनी लंबित राशि के लिए शिकायतें दर्ज कराईं,लेकिन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी मामले से पल्ला झाड़ते रहे। अधिकारियों का कहना है कि यह उनके कार्यकाल का मामला नहीं है, जबकि राशि 2023-24 में आई थी और उसी समय वितरण हो जाना चाहिए था। बड़ी बात यह है कि अन्य जिलों में बकाया भुगतान हो चुका है,लेकिन कोरिया जिले के स्वास्थ्य कर्मियों को अब तक उनका हक नहीं मिला।

कहां गई करोड़ों की राशि?

यह मामला अब बड़े घोटाले की ओर इशारा कर रहा है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा एनएचएम से समय-समय पर करोड़ों रुपये की मांग की गई और राज्य सरकार ने इसे जारी भी किया,लेकिन स्वास्थ्य कर्मियों तक नहीं पहुंचा। यह पूरी राशि कहां और कैसे खर्च हुई? स्वास्थ्य कर्मियों ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय से लेकर राज्य स्तर तक शिकायत की है, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। अब सवाल उठता है कि क्या इस घोटाले की निष्पक्ष जांच होगी? और क्या स्वास्थ्य कर्मियों को उनका हक मिलेगा? यह देखना दिलचस्प होगा कि स्वास्थ्य विभाग और सरकार इस मामले में क्या कदम उठाते हैं।

कब-कब मांगी गई राशि और कब मिली?

तत्कालीन सीएमएचओ कोरिया द्वारा विभिन्न तिथियों में एनएचएम से राशि की मांग की गई, इस राशि को विभिन्न प्रोत्साहन भुगतान और अन्य स्वास्थ्य योजनाओं में देने की बात कही गई थी।

जिसमें प्रमुख रूप से...

28 अगस्त 2023: 5 करोड़

23 अक्टूबर 2023: 1 करोड़

22 मार्च 2024: 1 करोड़

राशि कहां और कैसे खर्च की गई?

वहीं,राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन रायपुर द्वारा कोरिया जिले को करोड़ों रुपये जारी किए गए...इसके बावजूद स्वास्थ्य कर्मियों को उनका हक नहीं मिला...जिससे संदेह गहरा गया है कि यह राशि कहां और कैसे खर्च की गई?

जिनमें प्रमुख रूप से...

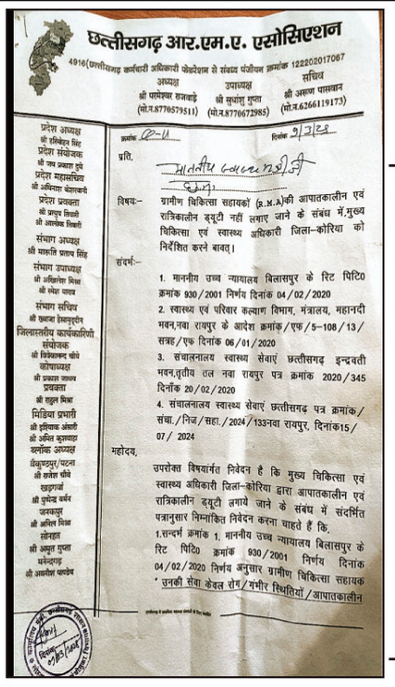

1 सितंबर 2023: 5.23 करोड़

10 अक्टूबर 2023: 7.60 करोड़

26 नवंबर 2023: 9 करोड़

28 नवंबर 2023: 9.80 करोड़

27 दिसंबर 2023: 10.33 करोड़

7 मार्च 2024: 1.60 करोड़

27 मार्च 2024: 1 करोड़

28 मार्च 2024: 65 लाख

ग्रामीण चिकित्सा सहायकों की रात्रिकालीन ड्यूटी पर आपत्ति,संघ ने सीएमएचओ को निर्देशित करने की मांग की

आर.एम.ए. एसोसिएशन का विरोध,उच्च न्यायालय के आदेश का हवाला देकर ड्यूटी से राहत देने की अपील

-रवि सिंह-
कोरिया,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

जिले में ग्रामीण चिकित्सा सहायकों (आर.एम.ए.) की रात्रिकालीन एवं आपातकालीन ड्यूटी को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। छत्तीसगढ़ आर.एम.ए. एसोसिएशन ने इस मामले में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कोरिया को निर्देश जारी करने की मांग की है। एसोसिएशन ने कहा है कि उच्च न्यायालय के आदेशों के अनुसार ग्रामीण चिकित्सा सहायकों को केवल प्राथमिक चिकित्सा एवं स्थिरीकरण के लिए ही तैनात किया जा सकता है,जबकि उन्हें जिला अस्पतालों और सिविल अस्पतालों में रात्रि ड्यूटी पर लगाया जा रहा है, जो न्यायालय के आदेश का उल्लंघन है। आर.एम.ए. एसोसिएशन के पदाधिकारियों का कहना है कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा बार-बार आदेशों की अनदेखी की जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि ग्रामीण चिकित्सा सहायकों को आपातकालीन मामलों, एमएलसी केस और गंभीर रोगियों के इलाज का अधिकार नहीं है, इसलिए उन्हें ऐसी ड्यूटी में लगाने से उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की संभावना बनी रहती है।

न्यायालय के आदेशों की अनदेखी का आरोप

एसोसिएशन ने उच्च न्यायालय बिलासपुर के आदेश (रिट पिटिशन क्रमांक 930/2001, निर्णय दिनांक 04/02/2020) का हवाला देते हुए कहा कि ग्रामीण चिकित्सा सहायकों की भूमिका सिर्फ प्राथमिक चिकित्सा तक सीमित है और उन्हें रेफरल प्रक्रिया का हिस्सा बनाया गया है। इसके बावजूद स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिला अस्पताल और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में उनकी ड्यूटी लगाई जा रही है, जो न्यायालय के आदेशों की अवहेलना है। संघ ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग के आदेश (06/01/2020) और संचालनालय स्वास्थ्य सेवाओं के पत्र (20/02/2020 एवं 15/07/2024) में स्पष्ट रूप से निर्देश दिए गए हैं कि ग्रामीण चिकित्सा सहायकों को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और उप स्वास्थ्य केंद्र में ही पदस्थ किया जाना चाहिए, लेकिन उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, सिविल अस्पताल और जिला अस्पतालों में ड्यूटी पर लगाया जा रहा है।

संभावित जोखिम और विवाद की स्थिति

संघ के अनुसार,गंभीर मरीजों के इलाज के दौरान चिकित्सा अधिकारियों की जरूरत होती है, लेकिन ग्रामीण चिकित्सा सहायकों को ऐसी स्थिति में तैनात करने से न केवल मरीजों की जान को खतरा होता है,बल्कि विवाद की भी संभावना बनी रहती है। कई बार ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं जहां रोगियों के परिजन आक्रोशित हो जाते हैं और हिंसक घटनाएं हो सकती हैं। संघ ने यह भी कहा कि ग्रामीण चिकित्सा सहायकों को स्वास्थ्य विभाग की विभिन्न योजनाओं के संचालन के लिए नियुक्त किया गया था, लेकिन उन्हें आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं में लगाकर उनके अधिकारों का हनन किया जा रहा है।

मंत्री से हस्तक्षेप की मांग

संघ ने स्वास्थ्य मंत्री से मांग की है कि ग्रामीण चिकित्सा सहायकों को केवल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और उप स्वास्थ्य केंद्रों में ही ड्यूटी दी जाए और उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, सिविल अस्पतालों और जिला अस्पतालों में रात्रिकालीन एवं आपातकालीन ड्यूटी से मुक्त किया जाए। संघ ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही इस संबंध में उचित निर्देश नहीं दिए गए, तो वे आंदोलन करने पर मजबूर होंगे। अब देखना यह होगा कि स्वास्थ्य विभाग इस मामले में क्या कदम उठाता है और संघ की मांगों को कितनी गंभीरता से लेता है।

घटती-घटना खबर का असर...रिश्वतखोरी के आरोपी के जांच के लिए टीम हुई गठित

रिश्वतखोरी के आरोपों की जांच पर उठे सवाल,समिति गठन में स्वास्थ्य विभाग में नाराजगी

विकास खंड प्रबंधक पर 84 हजार रुपये रिश्वत मांगने के मामले जांच टीम गठित

-रवि सिंह-
कोरिया/सोनहत,19 मार्च 2025
(घटती-घटना)।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सोनहत में कार्यरत एक सीएचओ ने विकास खंड प्रबंधक डाटा शिवम गौतम पर 84 हजार रुपये रिश्वत मांगने का गंभीर आरोप लगाया है। शिकायतकर्ता सत्यदीप भगत ने कलेक्टर,पुलिस अधीक्षक और एंटी करप्शन ब्यूरो को लिखित शिकायत दी है, जिसमें उन्होंने रिश्वत न देने पर वेतन रोकने और नौकरी से निकालने की धमकी देने की बात कही है। सारे प्रामाणिक दस्तावेज के साथ खाते में पैसे का लेनदेन सहित कई तथ्य होने के बावजूद कोरिया के सीएमएचओ साहब अभी तक कोई कार्यवाही नहीं कर पाए, यहां तक की इस मामले के लिए जांच टीम भी गठित नहीं कर पाए, जिसे लेकर दैनिक घटती-घटना ने बड़ी प्रमुखता के साथ 19 मार्च को खबर प्रकाशित किया था जिसके बाद 18 मार्च के डेट पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने जांच टीम गठित की सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सोनहत में विकासखंड डाटा प्रबंधक (संविदा) शिवम गौतम पर लगे रिश्वतखोरी के आरोपों के बाद मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा गठित जांच समिति पर सवाल उठने लगे हैं। समिति में शामिल कुछ सदस्यों को लेकर स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों में भारी नाराजगी देखी जा रही है। स्वास्थ्य विभाग में वर्षों से जमे राकेश सिंह (प्रशिक्षण एवं मानव संसाधन, संविदा) और राकेश महिलांगे (सहायक ग्रेड-03) को जांच समिति में शामिल किए जाने पर कर्मचारियों ने कड़ी आपत्ति जताई है। आरोप है कि दोनों अधिकारियों के आरोपी से घनिष्ठ संबंध हैं,जिससे निष्पक्ष जांच पर संदेह जताया जा रहा है। कर्मचारियों का मानना है कि यदि निष्पक्ष जांच करानी है, तो समिति में ऐसे अधिकारियों को शामिल किया जाना चाहिए जिनका आरोपी से कोई संबंध न हो।

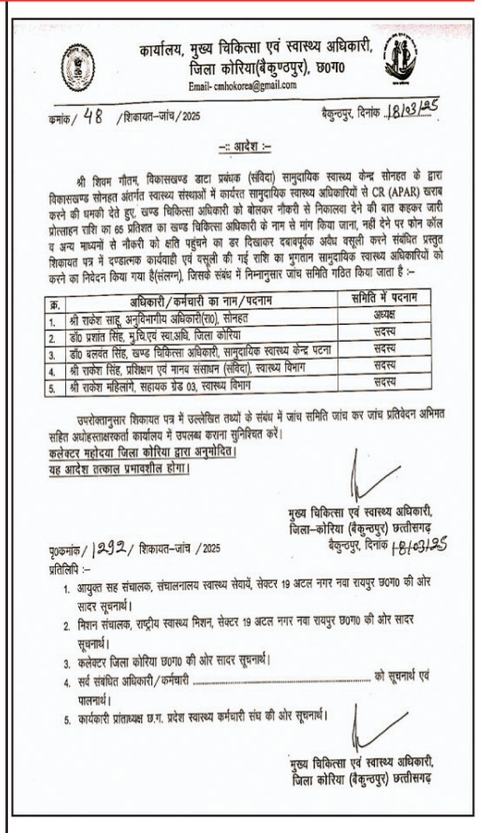

स्वास्थ्य विभाग में गहराया विवाद,कर्मचारियों में रोष

स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों और सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों में इस पूरे घटनाक्रम को लेकर भारी आक्रोश है। कर्मचारियों का कहना है कि स्वास्थ्य विभाग के स्थापना शाखा से जुड़े कुछ पुराने अधिकारियों और कर्मचारियों का प्रभाव इतना अधिक है कि वे अपने करीबी लोगों को महत्वपूर्ण जांच समितियों में जगह दिलवा देते हैं। इससे निष्पक्ष जांच की उम्मीद खत्म हो जाती है और मामलों को रफा-दफा कर दिया जाता है।

कर्मचारी संघ ने की जांच समिति में बदलाव की मांग

छत्तीसगढ़ प्रदेश स्वास्थ्य कर्मचारी संघ ने कलेक्टर कोरिया और स्वास्थ्य विभाग के उच्च अधिकारियों से मांग की है कि समिति में निष्पक्ष और स्वतंत्र अधिकारियों को शामिल किया जाए, ताकि रिश्वतखोरी के इस गंभीर मामले की निष्पक्ष जांच हो सके और दोषियों पर उचित कार्रवाई की जा सके।

क्या होगा अगला कदम?

स्वास्थ्य विभाग में इस मामले को लेकर लगातार चर्चाएं जारी हैं। अब देखना होगा कि क्या उच्च अधिकारी कर्मचारियों की मांगों पर ध्यान देते हैं या फिर जांच समिति को लेकर उठ रहे सवालों के बावजूद उसी रूप में जांच को आगे बढ़ाया जाएगा। कर्मचारी संघ ने संकेत दिए हैं कि अगर निष्पक्ष जांच सुनिश्चित नहीं हुई, तो वे आगे विरोध प्रदर्शन का रुख अपना सकते हैं।

छत्तीसगढ़ प्रदेश चेंबर ऑफ़ कॉमर्स के पदाधिकारी का हुआ चयन,अजय बने प्रदेश उपाध्यक्ष तो शैलेंद्र बने प्रदेश मंत्री

-संवाददाता-
कोरिया,19 मार्च 2025 (घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ प्रदेश चेंबर ऑफ कॉमर्स के प्रदेश उपाध्यक्ष पद के लिए अजय गुप्ता और प्रदेश मंत्री पद के लिए शैलेन्द्र शर्मा का निर्विरोध सर्वसम्मति से चयन किया गया है। उनके इस महत्वपूर्ण पद पर चयन से कोरिया चेंबर ऑफ कॉमर्स के सभी सदस्यों,व्यापारियों और इष्टमित्रों में हर्ष की लहर दौड़ गई है। कोरिया चेंबर ऑफ कॉमर्स के सदस्यों ने दोनों पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। व्यापारिक समुदाय ने विश्वास जताया कि उनके नेतृत्व में व्यापारिक हितों को मजबूती मिलेगी और क्षेत्र के व्यापार को नई दिशा मिलेगी। इस अवसर पर व्यापार जगत के कई गणमान्य व्यक्तियों ने श्री अजय गुप्ता और श्री शैलेन्द्र शर्मा को शुभकामनाएं देते हुए उनके नेतृत्व की सराहना की और उम्मीद जताई कि वे व्यापारिक समुदाय की समस्याओं के समाधान और उनके हितों की रक्षा के लिए सक्रिय भूमिका निभाएंगे।

AMBIKAPUR GG PAPER 20 MARCH 2025_Layout 2 3/20/2025 1:58 AM Page 7

मुक्केबाजी महासंघ में घमासान,सचिव-कोषाध्यक्ष निलंबित

चुनाव से पहले वित्तीय अनियमितताओं पर भी कार्रवाई

नई दिल्ली,19 मार्च 2025। भारतीय मुक्केबाजी महासंघ (बीएफआई) में चुनाव से पहले घमासान चरम पर पहुंच गया है। बीएफआई ने मंगलवार को महासचिव हेमंत कलिता और कोषाध्यक्ष दिग्विजय सिंह को वित्तीय अनियमितताओं के आरोप में निलंबित कर दिया। साथ ही 28 मार्च को होने वाले चुनाव के लिए कलिता के अध्यक्ष पद पर नामांकन को भी रद्द कर दिया। बीएफआई ने दोनों का निलंबन दिल्ली हाईकोर्ट के पूर्व जज सुधीर कुमार जैन की जांच रिपोर्ट के आधार पर किया है। जैन

को बीएफआई ने ही महासंघ में वित्तीय अनियमितताओं की जांच की जिम्मेदारी सौंपी थी।

अध्यक्ष पद पर अब त्रिकोणीय मुकाबला

कलिता का नामांकन रद्द होने से अध्यक्ष पद पर मुकाबला अजय सिंह, राजेश भंडारी और डी चंद्रलाल के बीच रह गया है। खेल संहिता के अनुसार अध्यक्ष चार साल के तीन लगातार कार्यकाल पूरे कर सकता है, जबकि महासचिव और कोषाध्यक्ष चार-चार वर्ष के दो कार्यकाल पूरे करने के बाद चार वर्ष के कूलिंग ऑफ पीरियड पर जाएंगे। इसके बाद वे चार साल के एक कार्यकाल के लिए फिर से चुनाव लड़ने के योग्य होंगे। कर्नाटक के एन सतीश का नामांकन भी महासचिव पद पर रद्द किया गया है।

जांच रिपोर्ट खेल मंत्रालय को भेजी

बीएफआई के अध्यक्ष अजय सिंह की ओर से जारी पत्र में कहा गया, जस्टिस जैन ने अपनी जांच में दोनों पदाधिकारियों को वित्तीय अनियमितताओं और कुप्रबंधन का दोषी पाया है। महासंघ में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए दोनों को उनके पदों से निलंबित किया जाता है। जस्टिस जैन की जांच रिपोर्ट खेल मंत्रालय को भी भेजी गई है। कलिता का नामांकन खेल संहिता के उल्लंघन पर रद्द किया गया है। जिसमें कहा गया है कि उनके बीएफआई में दो कार्यकाल पूरे हो गए हैं।

सुरेश रैना ने बताया IPL में किन युवा खिलाड़ियों पर रखें नजर

नई दिल्ली,19 मार्च 2025। भारतीय टीम का धाकड़ बल्लेबाज सुरेश रैना ने 2020 में इंटरनेशनल क्रिकेट के अलविदा कह दिया था। उन्होंने 2022 में आईपीएल समेत सभी तरह की क्रिकेट को छोड़ने का फैसला लिया था। क्रिकेट छोड़ने के बाद रैना कमेंट्री करते नजर आते हैं। इसके अलावा रिटायर खिलाड़ियों की कुछ लीग में भी खेलते हैं। आईपीएल के सबसे सफल बल्लेबाज और बेहतरीन फील्डर होने के बाद भी रैना अभी तक किसी टीम को कोचिंग देते या मेंटर करते नजर नहीं आए हैं।

जल्द नए रूप में दिख सकते हैं सुरेश रैना

मिस्टर आईपीएल के नाम से मशहूर 38 साल के सुरेश रैना जल्द ही किसी टीम को कोचिंग देते नजर आ सकते हैं। उन्होंने खुद इसका खुलासा किया। हालांकि वह आईपीएल टीम को कोचिंग देंगे या इंटरनेशनल टीम को यह नहीं बताया। जियोस्टार के शो पर नवभारत टाइम्स डॉट कॉम ने रैना से कोचिंग देने के बारे में सवाल किया। इसपर जवाब देते हुए उन्होंने कहा- जल्दी बताऊंगा आपको,चल रहा है बात। अभी नहीं बताउंगा।

रॉबिन मिंज पर नजर रखने को कहा

आईपीएल से भारतीय टीम को कई बेहतरीन युवा खिलाड़ी मिलते हैं। हर सीजन कुछ युवा खिलाड़ी आईपीएल से टीम इंडिया में एंट्री मारते हैं। इसके बाद सुरेश रैना से आईपीएल को लेकर सवाल किया हुआ। हमने उनसे पूछा कि आईपीएल में किन युवा खिलाड़ियों पर नजरें रखनी चाहिए तो उन्होंने कहा- एक-दो सीएसके में यंगेस्ट प्लेयर है आंद्रे सिद्धार्थ वो है। जो झारखंड़ का विकेटकीपर है एमआई के पास रॉबिन मिंज है वो है।

इसके साथ ही सुरेश ट्रेंट बोल्ट और जसप्रीत बुमराह को एक साथ बॉलिंग करते देखने के लिए उत्साहित हैं। बुमराह और बोल्ट इस बार मुंबई इंडियंस की टीम का हिस्सा हैं। रैना ने कहा- मैं ट्रेंट बोल्ट और जसप्रीत बुमराह की जुगलबंदी देखना चाहता हूं। दीपक चाहर भी मुंबई में है। उनकी गेंदबाजी को मुंबई का विकेट काफी सूट करेगा।

भारत ने मालदीव को 3-0 से हराया,संन्यास से वापसी पर चमके कप्तान सुनील छेत्री

शिलांग, 19 मार्च 2025। भारत ने मालदीव को 3-0 से हरा दिया। शिलांग में खेले गए इस मुकाबले में संन्यास से वापसी कर पहली बार

मुकाबला खेलने उतरे कप्तान सुनील छेत्री ने शानदार प्रदर्शन किया और टीम को जीत दिलाई। राहुल भेके ने 35 वें मिनट में शानदार हेडर के जरिए पहला गोल करके भारत को बढ़त दिलाई। 66 वें मिनट में लिस्टन कोलाको ने एक और शानदार हेडर लगाया, जिससे भारत 2-0 से आगे हो गया। फिर 76वें मिनट में भारतीय कप्तान सुनील छेत्री ने बहुप्रतीक्षित गोल किया, वह भी हेडर ही था। इस तरह भारतीय टीम ने यह मुकाबला अपने नाम कर लिया।

अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय शतरंज टूर्नामेंट का डीयू में आगाज...20 मार्च तक 16 विवि के बीच टक्कर

नई दिल्ली,19 मार्च 2025। दिल्ली विश्वविद्यालय में भारतीय अंतर विश्वविद्यालय शतरंज (महिला) टूर्नामेंट का आगाज मंगलवार से हुआ है। भारतीय विश्वविद्यालय संघ(एआईयू) की ओर से इस तीन दिवसीय(18-20 मार्च) टूर्नामेंट की जिम्मेदारी डीयू को सौंपी गई है। टूर्नामेंट में देशभर से 16 विश्वविद्यालयों की टीमें भाग ले रही हैं। इसमें 96 खिलाड़ी शामिल हैं। डीयू के खेल परिसर स्थित बहुउद्देश्यीय सभागार में मंगलवार को इस टूर्नामेंट की शुरूआत हुई। इस अवसर पर डीयू कल्चर काउंसिल के चेयरपर्सन अनूप लाठर बतौर मुख्य अतिथि व दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स के प्रिंसिपल प्रो. राजीव चोपड़ा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

टूर्नामेंट के शुभारंभ के अवसर पर मुख्य अतिथि अनूप लाठर ने कहा कि शतरंज के मोहरों की चाल जीवन में हर तरह की विकृतियों से बचने और निर्णय लेने की सीख देती है। उन्होंने कहा कि खेल हमारे अंदर भविष्य में निर्णय लेने की क्षमता विकसित करते हैं। हम खेल खेलते हैं, खेलों से सीखते हैं और उस सीख से जीतते हैं। शतरंज एक विलक्षण खेल है।

विशिष्ट अतिथि प्रो. राजीव चोपड़ा ने कहा कि खिलाड़ी कभी लूजर नहीं होता, एक हारेगा तो दूसरा जीतेगा। डीयू के शारीरिक शिक्षा एवं खेल निदेशक डॉ अनिल कुमार कलकल ने बताया कि इस अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय शतरंज (महिला) टूर्नामेंट में चार जोन से कुल 16 विश्वविद्यालय भाग ले रहे हैं। उत्तरी जोन से डीयू, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय और पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला शामिल है। पूर्वी जोन से एडमस विश्वविद्यालय पश्चिम बंगाल, हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग (छतीसगढ़),कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छतीसगढ़) शामिल हैं। दक्षिणी जोन से मद्रास विश्वविद्यालय चेन्नई, अन्ना विश्वविद्यालय चेन्नई, भारथिअर विश्वविद्यालय(कोयंबटूर) तमिलनाडु और एसआरएम आईएसटी विवि तमिलनाडु भाग ले रहे हैं।

पंजाब किंग्स जीत के साथ करना चाहेगी आईपीएल की शुरुआत

हेड कोच बोले-टीम पूरी तरह से तैयार

चंडीगढ़,19 मार्च 2025। पंजाब किंग्स टीम में युवा और अनुभवी खिलाड़ियों का मिश्रण हैं और टीम इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में किसी भी टीम को चुनौती देने का दम खम रखती है। यह कहना है टीम के हेड कोच रिकी पोंटिंग का है,उन्होंने यह बात मंगलवार को पीसीए क्रिकेट स्टेडियम मुल्लांपुर में एक प्रेस वार्ता के दौरान कही।

उनके साथ टीम के कप्तान श्रेयस अय्यर भी मौजूद रहे। अय्यर ने कहा कि ही मैं दो दिन पहले ही टीम के साथ जूडा हूं लेकिन टीम के साथ अनुभव अच्छा है इसके साथ ही टीम में कई युवा खिलाड़ी है अपना बेहतर देने के लिए प्रयास कर रहे है।

मुझे नंबर-3 पर खेलना पसंद

चैंपियंस ट्रॉफी भारत को नंबर 4 पर खेलते हुए भारत को जीतने में श्रेयस अय्यर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, उन्होंने आईपीएल में कौन से नंबर पर बल्लेबाजी करने के सवाल पर कहा कि टी-20 मुकाबलो में नंबर-3 पर खेलना पसंद करता हूँ,लेकिन अंतिम फैसला कोच पर निर्भर करता है कि मुझे किस नंबर पर खिलाना है,इसके साथ ही उन्होंने कहा

कि वनडे में नंबर-4 पर खेलता रहा हूँ,लेकिन मैंने हमेशा बैटिंग टीम की जरूरत के हिसाब की है। ऐसे में टीम के कोच मुझे जिस पोजीशन पर खेलने के लिए कहेगें उसपर बैटिंग करने के लिए तैयार हूं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि किंग्स टीम में कई बेहतरीन खिलाड़ी शामिल है जो किसी भी पोजीशन पर खेल सकते है ऐसे में हमारा फोकस सिर्फ मैच जीतने पर है।

हेड कोच के पास अनुभव

हैंड कोच रिकी पोंटिंग के बारे में बताते हुए टीम के कप्तान ने कहा कि रिकी के साथ मैंने अलग-अलग फ्रैंचाइजी में 3-4 साल इकट्ठे काम किया है ऐसे में रिकी के पास अनुभव की कोई कमी नहीं है इसके साथ ही उनके पास खिलाड़ियों की परख भी बहुत अच्छी है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि वह मैच के अनुसार अपनी रणनीति में बदलाव करते रहते है। ऐसे में हमारे पास कई युवा ऑलराउंडर टीम में है जिसका प्रयोग मैच व विकेट के अनुसार किया जाएगा।

मैक्सवेल, शशांक, आशुतोष तीनों बेहतर

श्रेयर अय्यर ने कहा कि टीम में हर खिलाड़ी को अपनी अपनी भूमिका के बारे में पता है। वहीं टीम में कई खिलाड़ी है जो मैच को जीतने में दम रखते है। टीम में मैक्सवेल, शशांक, आशुतोष तीनों बेहतर खिलाड़ी है इन्हें पता है कि मैच में स्थिति के हिसाब से कैसे गियर चेंज करना है। बाकी टीम धर्मशाला में अपना कैंप लगा चुकी है और अब मुल्लांपुर में कैंप में टीम कड़ा अभ्यास कर रही है।

टीम ने दुधिया रोशनी में बहाया पसीना

पंजाब किंग्स का मुल्लांपुर क्रिकेट स्टेडियम में अभ्यास का दूसरा दिन रहा। टीम के खिलाड़ी शाम 5 बजे के बाद स्टेडियम पहुंच गए थे। इसके बाद टीम के खिलाड़ियों ने देर शाम तक फ्लड लाइट्स की दुधिया रौशनी में जमकर पसीना बहाया। टीम ने रनिंग के बाद बल्लेबाजी, गेंदबाजी और फील्डिंग में दम खम दिखाया। वहीं आईपीएल में स्टेडियम में तैयारियां हो चुकी है। मुकाबलों से पहले स्टेडियम में दर्शकों को धूप और बारिश की मार से बचाने के लिए कैनोपी लगाने का काम पूरी तरह से जोरो पर हैं।

जो कभी नहीं हुआ वो इस सीजन होगा, एबी डिविलियर्स की भविष्यवाणी से खौफ में होंगे गेंदबाज

नई दिल्ली,19 मार्च 2025। आईपीएल में खेल काफी तेजी से बदल रहा है। बीसीसीआई 2023 में एक नया नियम लेकर आई थी। इसे इम्पैक्ट प्लेयर रूल नाम दिया गया था। यह नियम फुटबॉल के सब्स्टिट्यूट नियम जैसा ही है। जहां एक टीम मैच में किसी भी समय एक खिलाड़ी बदल सकती है। इससे टीमों की बल्लेबाजी लंबी हो गई है। बड़े-बड़े स्कोर देखने को मिल रहे हैं। कई खिलाड़ियों ने इसकी आलोचना की लेकिन 2025 में भी यह नियम जारी रहेगा।

साउथ अफ्रीका के दिग्गज बल्लेबाज और आरसीबी का हिस्सा रहे एबी डिविलियर्स भी इस नियम के पक्ष में मालूम नहीं पड़ते हैं। जियो हॉटस्टार पर बात करते हुए एबीडी ने कहा- इम्पैक्ट प्लेयर रूल ने गेम का काफी बदल दिया है। जैसा कि हमने कुछ खिलाड़ियों के कमेंट देखे हैं, इससे टॉप-3 के बल्लेबाज और ज्यादा रिस्क ले सकते हैं। इससे लगता है कि यह थोड़ा अनफेयर है और मैंने आलोचना भी की है।

एबी डिविलियर्स का मानना है कि आईपीएल 2025 में 300 का स्कोर देखने को मिल सकता है। उन्होंने कहा- पावरप्ले की वजह से सिर्फ दो फील्डर रिंग के बाहर होते हैं। इसके साथ ही बल्लेबाजों को अतिरिक्त आजादी मिलती है तो गेंदबाजों के लिए चीजें मुश्किल हो जाती हैं। लेकिन यह बल्लेबाजों के लिए रोमांचित करने वाला है। हम इस आईपीएल सीजन में 300 रनों का आंकड़ा पार होते देख सकते हैं।

पिछले सीजन से पहले आईपीएल का सबसे बड़ा स्कोर 263 रन था। 2013 में आरसीबी ने क्रिस गेल के 175 रनों की मदद से यह टोटल खड़ा किया था। पिछले सीजन चार बार इससे बड़े स्कोर बने। सनराइजर्स हैदराबाद ने आरसीबी के खिलाफ 287 रन ठोके। फिर मुंबई के खिलाफ 277 और दिल्ली के खिलाफ 266 रन बनाए। केकेआर ने दिल्ली के खिलाफ 272 रन ठोके। इसके साथ ही 261 रन बनाने के बाद भी केकेआर को पंजाब किंग्स के खिलाफ 8 गेंद रहते हार झेलनी पड़ी थी।

जान्हवी कपूर-वरुण धवन स्टारर सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी की रिलीज डेट आउट

अभिनेता वरुण धवन और जान्हवी कपूर स्टारर अपकमिंग फिल्म सनी संस्कारी की तुलसी कुमारीं की रिलीज डेट सामने आ चुकी है। फिल्म निर्माताओं ने सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर कर बताया कि फिल्म सिनेमाघरों में कब रिलीज होगी। फिल्म सनी संस्कारी की तुलसी कुमारीं 12 सितंबर, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

फिल्म में सान्या मल्होत्रा,रोहित सराफ,अक्षय ओबेरॉय,मनीष पॉल और मानिनी चड्ढा ने काम किया है। सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी' का निर्देशन शशांक खेतान ने किया है, जो हम्प्टी शर्मा की दुल्हनिया', बद्रीनाथ की दुल्हनिया' और धड़क' के लिए जाने जाते हैं। यह फिल्म पहले 18 अप्रैल, 2025 को रिलीज होने वाली थी। हालांकि, निर्माण में देरी के कारण अब यह सितंबर में रिलीज होगी।सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी वरुण धवन और जान्हवी कपूर की दूसरी फिल्म है, इससे पहले वे नितेश तिवारी के निर्देशन में बनी फिल्म बवाल में साथ काम कर चुके हैं। इस रोमांटिक-कॉमेडी का निर्माण करण जौहर, हीरू यश जौहर,अपूर्व मेहता और शशांक खेतान ने किया है। वरुण ने हाल ही में मनीष पॉल के साथ वैनिटी वैन में बिताए कुछ मजेदार पलों की झलक प्रशंसकों को दिखाई थी।फिल्म में अहम भूमिका निभा रहे अभिनेता अक्षय ओबेरॉय ने सेट के माहौल पर बात करते हुए उसे फन जॉइंट फैमिली एक्सपीरियंस बताया था। सेट के अपने अनुभव के बारे में अक्षय ने बताया कि यहां का माहौल बेहद खास और उम्दा है। फिल्म की शूटिंग राजस्थान के जयपुर और जोधपुर जैसे खूबसूरत लोकेशन्स पर हो रही है।अक्षय ने कहा, यह सेट नहीं बल्कि एक बड़े, मजेदार संयुक्त परिवार का हिस्सा होने जैसा है और इसका सारा श्रेय शशांक को जाता है। हम साथ में खाना खाते हैं, साथ में मजेदार बातें करते हैं और साथ में वर्कआउट भी करते हैं। यहां की एनर्जी इतनी सकारात्मक और सहयोगात्मक है, जो सेट पर गुजारे लंबे समय को मजेदार बनाती है। उन्होंने कहा, चाहे शॉट्स के बीच में खाना पीना हो या वरुण और अन्य लोगों के साथ फिटनेस टिप्स शेयर करना हो, यह एक बेहतरीन जुगलबंदी है जो पूरे अनुभव को खास बना देती है।

हर पल आखिरी लगता है...धर्मेंद्र की बातें सुन भावुक हुए फैंस, बोले- हमारी उम्र भी आपको लग जाए

हिंदी सिने जगत के ही मैन धर्मेंद्र जितना अपनी अदायगी से दर्शकों को लुभाते हैं उतना ही सोशल मीडिया पोस्ट से भी छाए रहते हैं। एक नई पोस्ट में 89 वर्षीय अभिनेता ने दिल की बात शायराना अंदाज में बयां की तो प्रशंसक भावुक हो उठे।धर्मेंद्र ने इंस्टाग्राम पर अपना पोट्रेट शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, हर पल लगता हैज्ज् पल ये आखिरी है। जी भर कर लूं बातें मैं आपसे, ऐसा सभी को लगता है। हमेशा साहसी और पॉजिटिव बने रहो दोस्तों।सोशल मीडिया पर खासा पसंद किए जाने वाले अभिनेता धर्मेंद्र की लेटेस्ट पोस्ट पर उनके बेटे और अभिनेता सनी देओल ने दिल वाले इमोजी के साथ अपने जज्बात दिखाए। वहीं,उनके प्रशंसक भावुक नजर आए और कमेंट कर अभिनेता से कहा कि वह ऐसी बातें न किया करें।एक यूजर ने लिखा,उगता हुआ सूरज आपको

दुआ दे, खिलता हुआ फूल आपको खुशबू दे, हम तो देने के काबिल नहीं हैं, देने वाला आपको हजार खुशियां दे। सर, आप जैसा इंसान, आप जैसा एक्टर इस दुनिया में दोबारा नहीं मिलेगा। दूसरे यूजर ने लिखा, सर, आप उदास क्यों हैं? तीसरे ने लिखा,ऐसा मत बोलिए सर जी। एक अन्य यूजर ने धर्मेंद्र को जिंदादिल बताते हुए आगे लिखा, धरम जी,सपने में भी कभी ऐसा ख्याल न लाइए। आप ऐसी बातें ना करें। आपको नहीं पता कि आप कितनों को जीने का हौसला देते हैं। आप खुश, दीर्घायु और हमेशा स्वस्थ रहें। ईश्वर से यही प्रार्थना है।इससे पहले धर्मेंद्र ने होली के मौके पर एक वीडियो शेयर किया था। वीडियो में छोटे बच्चे टीवी के सामने मस्ती करते नजर आए। टीवी पर पाजी का गाना तू जो कहेगा मैं वो सब करूंगा...बज रहा है। वीडियो को इंस्टाग्राम पर शेयर करते हुए धर्मेंद्र ने कैप्शन में लिखा, देखिए कैसे ये बच्चे मेरे पुराने गाने का लुत्फ उठा रहे हैं।तू जो कहेगा मैं वो सब करूंगा...गाना फिल्म मां का है, जिसे आवाज मोहम्मद रफी ने दी थी।

C M Y K

संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

घटती घटना

विधानसभा परिसर में गूंजी बस्तर के युवाओं की बुलंद आवाज

सीएम साय बोले...आपका संकल्प हमारा संकल्प,छत्तीसगढ़ को बनाएंगे नक्सल मुक्त

नक्सलवाद से मुक्ति और विकास की राह पर आगे बढ़ने का है इरादा

रायपुर,19 मार्च 2025। छत्तीसगढ़ के सुदूर अंचल बीजापुर जिले के युवाओं ने आज लोकतंत्र के मंदिर विधानसभा परिसर में इतिहास रच दिया। राज्य की 'स्वामी विवेकानंद युवा प्रोत्साहन योजना' के तहत शैक्षणिक भ्रमण पर पहुंचे बीजापुर के इन युवा प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के सामने एकजुट होकर अपनी मंशा व्यक्त करते कहा, हम अपने गांव, जिले और प्रदेश को नक्सलवाद से मुक्त देखना चाहते हैं और विकास की मुख्यधारा में शामिल होकर अपने भविष्य को उज्जवल बनाना चाहते हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर मुख्यमंत्री साय ने युवाओं की इस मजबूत इच्छाशक्ति की सराहना करते हुए कहा, 'आपका संकल्प ही हमारा संकल्प है। यदि क्षेत्र के युवा ठान लें, तो हम सभी के सहयोग से जल्द ही नक्सलवाद के अंधकार को समाप्त कर छत्तीसगढ़ को समृद्धि और विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जाएंगे।'

सशक्त युवाःसशक्त छत्तीसगढ़

मुख्यमंत्री साय ने इस अवसर पर युवाओं को यह संदेश दिया कि शिक्षा ही विकास का मूलमंत्र है। जब युवा सही दिशा में आगे बढ़ेंगे,तो कोई भी ताकत क्षेत्र के विकास को बाधित नहीं कर सकती है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की युवा पीढ़ी अब बदलाव के लिए तैयार है। बीजापुर के युवाओं की यह मजबूत आवाज पूरे प्रदेश के लिए एक नई रोशनी लेकर आई है।

नक्सल मुक्त छत्तीसगढ़ बनाएंगेः सीएम साय

विकसित छत्तीसगढ़ के संकल्प को जल्द पूरा करने की प्रतिबद्धता के साथ मुख्यमंत्री साय ने बीजापुर के युवाओं से कहा कि हम आपके साथ हैं,आपके गांव के विकास और आप सभी के स्वर्णिम भविष्य को साकार करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने युवाशक्ति से आह्वान किया कि इस बदलाव का हिस्सा बनें,अपने सपनों को साकार करें, और छत्तीसगढ़ को नई ऊंचाइयों तक ले जाएं। उन्होंने युवाओं से सरकारी योजनाओं का अधिकतम लाभ उठाने की अपील की और कहा कि हम सभी मिलकर छत्तीसगढ़ को नक्सल मुक्त,विकसित और समृद्ध राज्य बनाएंगे।

'नियद नेल्ला नार योजना' से विकास की नई रोशनी

मुख्यमंत्री साय ने युवाओं को भरोसा दिलाया कि राज्य सरकार 'नियद नेल्ला नार योजना' के माध्यम से उनके गांवों तक मूलभूत सुविधाएं पहुंचाने के लिए तेजी से कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि निरंतर खुल रहे सुरक्षा कैंपों और सुदूर अंचलों में प्रशासन की बढ़ती पहुंच से नक्सली दायरा सिमटता जा रहा है, जिससे अब विकास को नई गति मिल रही है। मुख्यमंत्री ने हाल ही में अपने दिल्ली प्रवास के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से हुई महत्वपूर्ण चर्चा का जिक्र करते हुए कहा कि केंद्र सरकार भी बीजापुर और बस्तर संभाग के अन्य क्षेत्रों के विकास के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह राज्य के दूरस्थ इलाकों की स्थिति पर लगातार नजर रखते हैं और वहां हो रहे विकास कार्यों की नियमित समीक्षा कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने युवाओं को आश्वस्त किया कि उनके गांवों में मोबाइल टावर लगाने, पक्की सड़कें बनाने,हर घर तक बिजली पहुंचाने और परिवहन सुविधाओं का विस्तार करने की योजनाएं सरकार की प्राथमिकता में हैं। उन्होंने कहा कि इस दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है ताकि सुदूर अंचल के ग्रामीणों को भी शहरी सुविधाओं का लाभ मिल सके।

बीजापुर के युवाओं के लिए ऐतिहासिक दिन

बीजापुर जिले के विभिन्न गांवों से आए सैकड़ों युवाओं के लिए यह दिन एक ऐतिहासिक अनुभव से कम नहीं था। राजधानी रायपुर में आयोजित इस शैक्षणिक भ्रमण के दौरान उन्होंने रेलवे स्टेशन,छत्तीसगढ़ विधानसभा और वनवासी कल्याण आश्रम का दौरा किया। राजधानी में आगमन के दौरान युवाओं ने विधानसभा परिसर का दौरा किया और दर्शक दीर्घा में बैठकर सदन की कार्यवाही देखी। वे पहली बार लोकतंत्र के इस मंच से जनप्रतिनिधियों की बहस और नीतिगत चर्चाओं को देखकर रोमांचित हो उठे। इस दौरान उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा,वन मंत्री केदार कश्यप,स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, विधायक धरम लाल कौशिक, अनुज शर्मा और लता उसेंडी ने भी युवाओं से भेंट कर चर्चा की।

सरकार आपके साथ हैः उपमुख्यमंत्री का आश्वासन

उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने युवाओं से उनके गांव की स्थिति के बारे में विस्तार से जानकारी ली और उन्हें आश्वस्त किया कि राज्य सरकार आपके गांवों में पक्की सड़क, बिजली, शुद्ध पेयजल, राशन, चिकित्सा और आवास जैसी सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

महत्वपूर्ण न्यूज

राष्ट्रपति 24 को आएंगी रायपुर

रायपुर,19 मार्च 2025। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू छत्तीसगढ़ दौरे पर आने वाली है. वे छत्तीसगढ़ विधानसभा के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला के तहत विधानसभा सत्र की समाप्ति पर 'विधायकों को उद्बोधन' कार्यक्रम में शिरकत करेंगी. कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने बुधवार को विधानसभा परिसर का निरीक्षण किया और कार्यक्रम की तैयारियों,सुरक्षा व्यवस्था और अन्य आवश्यक प्रबंधों की विस्तार से समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सुरक्षा व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए और सभी व्यवस्थाएं तय मानकों के अनुसार पूरी की जाए. बैठक में यातायात नियंत्रण,पार्किंग व्यवस्था और आपातकालीन सेवाओं को लेकर भी विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही राष्ट्रपति के आगमन और प्रस्थान के लिए प्रवेश और निकास द्वार तय किए गए,जिससे कार्यक्रम में किसी भी प्रकार की अव्यवस्था न हो। प्रदेश के इस ऐतिहासिक अवसर को भव्य बनाने के लिए प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने सभी संबंधित विभागों को निर्देशित किया कि वे आपसी समन्वय से कार्य करें,ताकि राष्ट्रपति का दौरा सुचारू रूप से संपन्न हो सके। इसके अलावा राष्ट्रपति के साथ आने वाले विशिष्ट अतिथियों के लिए उचित बैठक व्यवस्था सुनिश्चित की गई है, ताकि उन्हें किसी प्रकार की असुविधा न हो।

सहकारी बैंक में किसानों से कमीशनखोरी

गौरेला पेण्ड्रा मरवाही,19 मार्च 2025। छत्तीसगढ़ के जीपीएम जिले में सहकारी बैंक में किसानों से पैसे निकालने के नाम पर कमीशनखोरी हो रही है. दरअसल, वायरल वीडियो में किसान बैंक कैशियर पर पैसे लेने का आरोप लगाते दिख रहे हैं। वीडियो में पूरे बैंक स्टाफ के इस खेल में मिलीभगत होने का आरोप लगाया गया। पूरा मामला गौरेला मेन रोड में मौजूद जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित शाखा पेंड्रारोड का बताया जा रहा है। वायरल वीडियो में बैंक कैशियर पर किसानों ने पैसे विड्रॉल कराने कमीशन लेने का आरोप लगाया है. एक किसानों वीडियो में बताया रहा है कि बैंक में पिछले कई दिनों से पैसा निकालने के नाम पर कमीशन के रूप में पैसा लिया जा रहा है,यही नहीं गरीब अशिक्षित किसानों से पैसा निकालने के विड्रॉल फॉर्म भरने के नाम पर 50 रुपये की मांग की जाती है। वायरल हो रहे वीडियो में किसान का कहना है कि 1 लाख रुपये पर 1000 रुपये और 50 हजार में 500 रुपये लिये जाते हैं। कमीशन राशि को किसान अपनी पास बुक में दबाकर कैशियर कांउटर में रख देता है और उसे उसकी राशि मिल जाती है। ये पैसा नहीं दिए जाने पर किसान को कैश (पैसा) नहीं है कहकर पहले तो बैंक द्वारा दिन भर इंतजार कराया जाता है और फिर शाम होते-होते कैश नहीं होने का कारण कहकर कल आना बोल दिया जाता है। बता दें कि छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा समर्थन मूल्य की राशि किसानों को इसी बैंक के माध्यम से दी जाती है. खासकर इन दिनों इस बैंक के अंदर और बाहर हजारों किसानों का जमवाड़ा अपनी राशि को लेने के इंतजार में खड़े रहना पड़ता है. बैंक द्वारा गरीब और भोले-भाले किसानों को उन्हीं के पैसा को देने के लिए बैंक कर्मी ठग रहे हैं।

सुनीता विलियम्स को सीएम विष्णुदेव साय ने दी बधाई

रायपुर,19 मार्च 2025। मुख्यमंत्री साय ने भारतीय मूल की प्रसिद्ध अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स को उनके ऐतिहासिक अंतरिक्ष मिशन की सफल समाप्ति और पृथ्वी पर सुरक्षित वापसी पर हार्दिक बधाई दी है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि यह असाधारण अभियान सुनीता विलियम्स के धैर्य, साहस और विज्ञान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की अद्भुत मिसाल है, जो पूरे विश्व के लिए प्रेरणादायी है। मुख्यमंत्री साय ने अपने संदेश में कहा कि नभ के पार गई नारी ने धैर्य को अपना हथियार बनाया और साहस,संकल्प एवं स्वाभिमान से नव इतिहास रच दिया। कठिनाइयों के बावजूद डटे रहना ही सफलता की असली पहचान है। सुनीता विलियम्स ने इस मिशन के माध्यम से विज्ञान और अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में एक नई उपलब्धि जोड़ी है. उनकी यह यात्रा न केवल भारत,बल्कि समूचे विश्व के लिए प्रेरणादायी है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि हम सभी को सुनीता विलियम्स पर गर्व है। उनकी असाधारण उपलब्धि से भारत का नाम एक बार फिर अंतरिक्ष जगत में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हुआ है। उनकी यह यात्रा विज्ञान और अनुसंधान में एक नई ऊर्जा का संचार करेगी।

छग में पकड़ाया फर्जी पत्रकारों का वसूली गैंग

ईमानदार आईएएस अमित कटारिया के नाम से करते थे उगाही

कबीरधाम,19 मार्च 2025। स्वास्थ्य विभाग के सचिव अमित कटारिया के नाम से स्वास्थ्य केंद्रों में पदस्थ कर्मचारियों से वसूली करने वाले गैंग का कवर्धा पुलिस ने भंडाफोड़ किया है। मामले में तीन फर्जी पत्रकारों के साथ स्वास्थ्य विभाग के सचिव के कथित पीए को गिरफ्तार किया गया है। कबीरधाम पुलिस ने मामले में जिन चार लोगों को पकड़ा है,उनमें स्वास्थ्य विभाग के सचिव के कथित पीए और वॉयस चेंजर एप का उपयोग करके महिला की आवाज में फोन करने वाले प्राइवेट आई टेक्नीशियन अमन बिसारिया के अलावा टाइम्स न्यूज इंडिया पोर्टल का संचालक रियाज अत्तारी, 24 सीजी न्यूज का कथित पत्रकार फिरोज खान और पोर्टल संचालक अजय जांगड़े शामिल हैं। बता दें कि 18 मार्च को कवर्धा थाना में प्रार्थी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भिंभौरी में पदस्थ ग्रामीण चिकित्सा सहायक मदन सिंह पुरले और पोंडी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में पदस्थ नेत्र सहायक अधिकारी प्रभात गुप्ता की शिकायत पर अमन बिसारिया, रियाज अत्तारी, फिरोज खान और अजय जांगड़े के खिलाफ धारा 319(2), 308(2), 61(2) बीएनएस के तहत अपराध पंजीबद्ध किया गया था। शिकायतकर्ता मदन सिंह पुरले ने बताया कि आरोपियों ने उन्हें वित्तीय अनियमितता की खबर प्रकाशित करने की धमकी दी और इसके बदले उनका निलंबन,सेवा समाप्ति एवं ट्रांसफर कराने की कोशिश की। दबाव में आकर आरोपियों ने प्रार्थी से कुल 10,000 रुपए की अवैध वसूली की। वहीं प्रार्थी प्रभात गुप्ता ने बताया कि फर्जी पत्रकारों ने उनके खिलाफ झूठी खबरें प्रकाशित कर मानसिक प्रताड़ना दी,आरटीआई द्वारा दबाव बनाते हुए निलंबन की धमकी देकर 32,000 रुपए की अवैध वसूली की। पुलिस जांच में सामने आया कि अमन बिसारिया ने प्रार्थी को सबसे पहले कॉल कर स्वास्थ्य सचिव अमित कटारिया तक मामले को भेजने और कार्रवाई की धमकी दी. उसके बाद रियाज अत्तारी ने 10,000 रुपए की मांग की, जिससे दबाव में आकर प्रार्थी ने पैसे दे दिए. इसके बाद रियाज अत्तारी ने प्रार्थी से कहा कि अब उसे फिरोज खान और अजय जांगड़े को भी सेट करना होगा, अन्यथा वे भी उसके खिलाफ झूठी खबरें प्रकाशित करेंगे।

मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक आईपीएस धर्मेंद्र सिंह के निर्देश पर एएसपी पुष्पेंद्र बघेल एवं पंकज पटेल के मार्गदर्शन और एसडीओपी कृष्ण कुमार चंद्राकर के पर्यवेक्षण में थाना कवर्धा की पुलिस टीम ने तत्परता से कार्यवाही कर आरोपियों को गिरफ्तार किया. कवर्धा थाना प्रभारी लालजी सिन्हा के नेतृत्व में इस पूरे प्रकरण की जांच की. गिरफ्तारी में साइबर सेल कवर्धा के स्ढ्ढ चंद्रकांत तिवारी, संजीव तिवारी, प्रधान आरक्षक चुम्मन साहू, अभिनव तिवारी के साथ पूरी टीम ने विशेष रूप से सहयोग किया।

बिजली विभाग का दोहरा रवैया

करोड़ों रुपए बकाया होने के बाद भी सरकारी दफ्तरों पर मेहरबानी...आम जनता पर कहर

खैरागढ़,19 मार्च 2025। अगर कोई आम उपभोक्ता बिजली बिल भरने में देरी कर दे, तो तुरंत कनेक्शन काटने की धमकी मिलती है। लेकिन सरकारी विभागों पर नोटिस पर नोटिस भेजे जा रहे हैं,कार्रवाई के नाम पर कुछ नहीं। बात करें आंकड़ों में तो बिजली विभाग का नवंबर 2024 में सरकारी विभागों पर 17 करोड़ रुपये बकाया था, जो अब 19.60 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है. लेकिन एक भी सरकारी दफ्तर की बिजली गुल नहीं हुई। बिजली विभाग के नोटिस सरकारी दफ्तरों की अलमारियों में धूल खा रहे हैं. वहीं दूसरी ओर आम जनता पर बिजली विभाग ऐसा टूटा कि 38,638 गरीब और मध्यमवर्गीय उपभोक्ताओं के कनेक्शन काट दिए।

सरकारी विभागों पर रहम

प्राप्त दस्तावेजों के अनुसार, सबसे ज्यादा बकाया ग्राम पंचायतों पर है, जिन पर नलजल 9.03 करोड़ रुपए बकाया है. इसके बाद बारी आती है,नगरीय निकाय की, जिस पर भी नलजल का 4.93 करोड़ रुपए बकाया है। इसके बाद नगरीय निकाय में सड़क बत्ती का 1.39 करोड़ रुपए, पुलिस विभाग पर 1.07 करोड़, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य पर 71 लाख, महिला एवं बाल विकास विभाग पर 25 लाख, जल संसाधन विभाग पर 21 लाख, वन विभाग पर 15 लाख, स्कूल शिक्षा पर 14 लाख और कई अन्य विभागों पर लाखों रुपए बकाया।

आम जनता से ताबड़तोड़ वसूली

बिजली विभाग का सरकारी विभागों पर तो बस नहीं चला,लेकिन गरीब और मध्यमवर्गीय उपभोक्ताओं पर जमकर डंडा चलाया. 38,638 उपभोक्ताओं के कनेक्शन काटे गए। डर के मारे 11,533 उपभोक्ताओं ने तुरंत 2 करोड़ 10 लाख रुपये जमा कर दिए। बिजली विभाग मोर बिजली एप और हाफ बिजली बिल योजना का प्रचार कर रहा है, लेकिन सरकारी विभागों को फ्री में बिजली दे रहा है।

तेजी से चल रही वसूलने की कार्रवाई

सीएसपीडीसीएल में कार्यपालन अभियंता एके द्विवेदी ने बताया कि शासकीय विभागों पर 2369 कनेक्शन हैं। 34 विभागों के 19 करोड़ 60 लाख बकाया है, जिसको वसूलने प्रयास किए जा रहे है. गैर शासकीय 23006 कनेक्शनों पर 1 करोड़ 95 लाख बकाया है, जिसको वसूलने की कार्रवाई तेजी से की जा रही है. लक्ष्य है कि 31 मार्च तक राशि वसूली जा सके।

सेंट्रल जेल में बंद कवासी लखमा से मिले सचिन पायलट

भाजपा सरकार पर लगाए गंभीर आरोप

रायपुर,19 मार्च 2025। प्रदेश कांग्रेस प्रभारी सचिन पायलट आज सेंट्रल जेल पहुंचे, जहां उन्होंने जेल में बंद पूर्व मंत्री कवासी लखमा से मुलाकात की। इस दौरान उनके साथ नेता प्रतिपक्ष चरणदास महंत, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज,विधायक देवेंद्र यादव समेत कई अन्य कांग्रेस नेता भी मौजूद रहे। जेल में कवासी लखमा से मुलाकात के बाद सचिन पायलट ने मीडिया से बातचीत में भाजपा सरकार पर तीखे हमले किए. उन्होंने कहा कि जो लोग भाजपा की विचारधारा का विरोध करते हैं, सरकार उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करती है। हम न्यायालय में लड़ाई लड़ते रहेंगे। लोगों का चरित्र हनन करने की कोशिश की जाती है.।सरकारी द्वारा एजेंसी के माध्यम से मनोबल तोड़ने की कोशिश की जाती है.।हमें पूरा विश्वास है कि हमें न्यायालय के माध्यम से विजय मिलेगीद्ध हमारा पोलिटिकल संघर्ष जारी रहेगा। सरकारी एजेंसी का धड़ल्ले से दुरुपयोग हो रहा है। ये व्यक्ति विशेष की लड़ाई नहीं,हम इसका पुरजोर विरोध करेंगे,पूरे देश में जहां-जहां बीजेपी सरकारी एजेंसी का दुरुपयोग कर रही है. वहां वहां विरोध करेंगे।

चरणदास महंत का बयान

नेता प्रतिपक्ष चरणदास महंत ने भी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि शासन की ओर से जो भी कष्ट मिल रहा है। उसे बड़े दिलेरी के साथ कवासी लखमा झेल रहे हैं। उनमें झेलने की ताकत है. जो वह सह रहे हैं वो सरकार की प्रताड़ना है. केंद्रीय और राज्य सरकार की प्रताड़ना को झेलने में कोई कोताही नहीं बरत रहे हैं। चरणदास महंत ने कहा कि हमारे प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट और अन्य पदाधिकारी भी उनसे मिलने आए थे।

सचिन पायलट के बयान पर सीएम साय का पलटवार

कहा...आरोप मिथ्या,अन्याय हो रहा है तो खुला है कोर्ट का दरवाजा

प्रदेश कांग्रेस प्रभारी सचिन पायलट ने सरकार पर जबरन कार्रवाई के आरोप लगाने के बाद मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि पायलट के आरोप मिथ्या है। केंद्रीय जांच एजेंसियां सोच-समझकर किसी पर हाथ डालती है। अगर अन्याय हो रहा है तो कोर्ट का दरवाजा खुला है। बता दें कि आज प्रदेश कांग्रेस प्रभारी सचिन पायलट सेंट्रल जेल पहुंचे,जहां उन्होंने जेल में बंद पूर्व मंत्री कवासी लखमा से मुलाकात की. इस दौरान उन्होंने कहा कि जो लोग भाजपा की विचारधारा का विरोध करते हैं,सरकार उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करती है। हम न्यायालय में लड़ाई लड़ते रहेंगे। लोगों का चरित्र हनन करने की कोशिश की जाती है। सरकारी द्वारा एजेंसी के माध्यम से मनोबल तोड़ने की कोशिश की जाती है। हमें पूरा विश्वास है कि हमें न्यायालय के माध्यम से विजय मिलेगी. हमारा पोलिटिकल संघर्ष जारी रहेगा। सरकारी एजेंसी का धड़ल्ले से दुरुपयोग हो रहा है। ये व्यक्ति विशेष की लड़ाई नहीं,हम इसका पुरजोर विरोध करेंगे,पूरे देश में जहां-जहां बीजेपी सरकारी एजेंसी का दुरुपयोग कर रही है. वहां वहां विरोध करेंगे।

सरकारी अस्पताल की बड़ी लापरवाही

जिस बीमार महिला को पुलिस ने इलाज के लिए कराया भर्ती,4 दिन बाद खेत में उसी का मिला शव

धरसींवा,19 मार्च 2025। रायपुर पुलिस को धरसींवा थाना क्षेत्र में एक महिला का संदिग्ध परिस्थिति में शव मिला था। इस मामले में अब शासकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रबंधन की बड़ी लापरवाही उजागर हुई है. दरअसल, मृत महिला को पुलिस ने चार दिन पहले अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया था। जो अचानक गायब हो गई थी और उसकी लाश कल यानी मंगलवार को बरामद हुई।

पेट्रोल पंप के पास मिली थी महिला

डायल 112 की टीम को जियो पेट्रोल पंप के पास से एक बीमार महिला मिली थी, जिसे इलाज के लिए धरसींवा के शासकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज के लिए भर्ती कराया। चार दिन के बाद यानी मंगलवार को उसी महिला का शव अस्पताल से 7 किमी दूर देवारी गांव के पास बरामद किया गया। धरसींवा थाना के टीआई राजेंद्र दीवान ने मामले को लेकर बताया कि शनिवार को पुलिस की डायल 112 सेवा पर प्वाइंट आया था कि एक अज्ञात बीमार महिला जियो पेट्रोल पंप के पास है. धरसींवा पुलिस की डायल 112 सेवा में तैनात जवान मौके पर पहुंचे और बीमार महिला को धरसींवा के शासकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र इलाज के लिए छोड़कर आए। 4 दिन बाद उसी महिला का अस्पताल से करीब 7 किलोमीटर दूर देवरी गांव के समीप खेत में संदिग्ध अवस्था में शव मिला। पुलिस ने मौका पंचनामा के बाद शव को धरसींवा चीर घर में पीएम के लिए रखवाया है और उसकी शिनाख्ती के प्रयास किए जा रहे हैं।

महिला अचानक हुई थी गायब बीएमओ विकास तिवारी

मामले पर बीएमओ विकास तिवारी का कहना है कि पुलिस की डायल 112 सेवा के जवान शनिवार को उक्त महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र धरसीवा छोड़कर गए थे। जांच में वह स्वास्थ्य पाई गई थी। चूंकि अस्पताल में मरीजों को भोजन भी बनता है इसलिए उसे भोजन भी कराया गया था। काफी समय तक वह वार्ड में ही रही लेकिन अचानक शनिवार की रात को ही गायब हो गई थी।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)